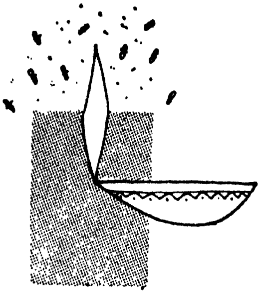
फानी बदांयूनी

और उनकी शायरी



संपादन: सरस्वती शरण



'फ़ानी' बदायूनी



और उनकी शायरी

सम्पादक

सरस्वती सरन 'कैफ़'

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

प्रथम संस्करण
जनवरी १६५६

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

फ़ानी वो बला-कश हूं ग़म भी मुझे राहत है
मैंने ग़मो-राहत की सूरत भी न पहचानी



मेरी इक उम्र 'फ़ानी' नज़अ़ के आ़लम में गुज़री है
मुहब्बत ने मेरी रग-रग से खींचा है लहू बरसों

जिस शायर ने अपने जीवन के कारुणिक पहलू की व्याख्या इतनी साफ़-साफ़ की हो उसे कुछ आलोचक 'यासियात का इमाम', 'रोने-बिसूरने वाला शायर' या 'इन्सानियत से गिरा हुआ' कहने लगें तो इससे अधिक दुख की बात और क्या हो सकती है ?

इन आलोचकों का मत है कि 'फ़ानी' की रचनाओं में यह निराशावाद एवं दुखवाद इसलिए भर गया कि उनका निजी जीवन दुखों, कष्टों और निराशाओं में व्यतीत हुआ। किन्तु इन लोगों का यह मत बिल्कुल ग़लत है।

कहने का मतलब यह नहीं है कि कवि के व्यक्तित्व का उसकी कविता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। पड़ता है, किन्तु किस ढंग से पड़ता है यह मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को समझे बग़ैर नहीं जाना जा सकता। परन्तु इस विषय पर बहस का यह मौक़ा नहीं है। इस समय तो यही कहना पर्याप्त है कि 'फ़ानी' अपनी ज़िन्दगी को इस प्रकार नहीं देखते थे जिस प्रकार उन पर दया करके उनके आलोचकों ने देखा है।

यह माना कि 'फ़ानी' की वकालत नहीं चली, उन्हें

हैदराबाद में हैडमास्टर के पद पर काम करना पड़ा, और उनकी पुत्री और पत्नी उनके सामने ही दिवंगत हो गईं। लेकिन क्या ये आपदाएं एक साधारण हैसियत वाले भारतीय के लिए इतनी अधिक हैं कि किसी कवि को, जो साधारणतः किसी और दिशा में जा रहा हो, उसके रास्ते से हटाकर पूर्णतः निशारावादी बना दें ? क्या हम कवि को ऐसा निकम्मा इंसान समझ लें जो जीवन में पूरा ऐश-आराम न उठा पाने पर रोने लगे ? यदि ऐसा मान लिया जाय तो भी कितने ऐसे भाग्यवान साहित्यकार मिलेंगे जिन्हें अपने जीवन में इच्छित सम्मान और सुख-साधन प्राप्त हुए हों ? 'फ़ानी' ही को क्यों ऐसा समझ लिया जाय कि वे रुपये के पीछे पागल थे और हर जगह असफल होने पर निराशावादी हो गए।

यह स्पष्ट है कि यदि 'फ़ानी' की दुख की अभिव्यक्ति को उनकी आर्थिक कठिनाइयों का फल समझा जाए तो फिर उनके प्रयासों को भी धन-लाभ की आशा से प्रेरित समझना चाहिए। उनके जीवन-वृत्तांत पर एक सरसरी नज़र डालने से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने जो भी काम किए उनमें शुरू ही से आर्थिक लाभ की आशा नहीं की जा सकती थी। उन्होंने रुपये को ज़रूरत से ज़्यादा महत्व कभी नहीं दिया और जो काम भी किये वे अपनी विशेष मनोवृत्ति से प्रेरित होकर—एक उच्च साहित्य देने की उत्कट इच्छा के वशीभूत होकर—किये। 'फ़ानी' को अपने जीवन-काल ही में अच्छी-ख़ासी ख्याति मिल गयी थी, भले ही उनके प्रशंसक उनके साहित्य का पूरा महत्व न समझे हों। ऐसी स्थिति में उनके जीवन को

निराशापूर्ण कहना सत्य की ओर से जान-बूझकर आंखें बंद करना ही कहा जाएगा।

'कुल्लियाते-फ़ानी' की भूमिका में स्वर्गीय क़ाज़ी अब्दुल-ग़फ़्फ़ार लिखते हैं: "मेरी आंखों ने उनकी एहतियाज (निर्धनता) का आलम देखा था। वह आलम देखा था जब सुबह के नाश्ते के बाद दोपहर के लिए दो रोटियों का इन्तज़ाम बहुत मुश्किल हो जाता था। लेकिन कभी हमदर्दी के इज़हार की जुर्'त न होती थी······कहीं वे बुरा न मान जायें—मैं कहूं कि चन्द रोज़ मेरे घर रहो तो वे कहीं यह न समझें कि मैं उनकी तंगदस्ती के ख़याल से उनको यह दावत दे रहा हूं। कभी एक हर्फ़ अपने कवाइफ़ (दशा) के मुतअ़ल्लिक़ उनकी ज़बान पर न आता था। एक चट्टान की तरह जो बेरहम मौजों के थपेड़े खाती हो आख़िरी सांस तक सब कुछ खोकर भी उन्होंने अपनी ख़ुद्दारी का लंगर क़ायम रखा।"

यह है 'फ़ानी' की असली तसवीर।

संक्षिप्त जीवन-वृत्तांत

'फ़ानी' के पूर्वज काबुल के रहने वाले थे। शाह आलम बादशाह के ज़माने में उनके एक पूर्वज नवाब बशारत अली खाँ भारत में रहने लगे। वे बदायूं के गवर्नर बना दिये गये और उनकी जायदाद में १८४ गांव थे। उनके बेटे और 'फ़ानी' के पितामह ने १८५७ ई० में विद्रोहियों का साथ दिया और इस कारण वे काले पानी भेज दिये गये और जायदाद ज़ब्त हो गई। उनके बेटे ('फ़ानी' के पिता) जनाब मुहम्मद शुजाअ़त

अली खाँ साहब ने इस दुर्भाग्य में भी अपनी व्यक्तिगत योग्यता की बदौलत इज़्ज़त-आबरू की ज़िंदगी बसर की। वे पुलिस विभाग में इंस्पेक्टर थे।

इन्हीं के पुत्र जनाब शौकत अली खाँ, जो बाद में प्रसिद्ध कवि 'फ़ानी' हो गये, १३ सितम्बर १८७९ को बदायूँ ज़िले के इस्लाम नगर नामक क़स्बे में पैदा हुए। उन्होंने १८९७ ई० में बदायूँ से इन्ट्रेंस पास किया और १९०१ ई० में बरेली कालेज बरेली से बी० ए० पास किया। पुलिस के लोग अगर किसी वर्ग को ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं तो वह वकील वर्ग है क्योंकि केवल यही ऐसा ग़ैर-सरकारी वर्ग होता है जो पुलिस को ख़ातिर में नहीं लाता। इसलिए स्वभावतः शौकत अली खाँ के पिता ने उन्हें वकील बनाना चाहा और उनकी स्वाभाविक रुचि उधर न होते हुए भी उन्हें ज़बर्दस्ती वकालत पढ़ायी। दो-दो कालेजों (इलाहाबाद का म्योर सेन्ट्रल कालेज और अलीगढ़ का मुहमडन कालेज) में छः-सात साल में उन्होंने वकालत का दो साल का कोर्स पूरा किया और १९०८ ई० में एल-एल० बी० होकर बदायूं और फिर बरेली में वकालत की।

'फ़ानी' को ज़बर्दस्ती वकालत में घुसेड़ कर उनके पिता ने जो ग़लती की थी उसका फल बेचारे 'फ़ानी' को सारी उम्र भोगना पड़ा। उनके मित्र और आलोचक इस बात को भूल जाते हैं कि 'फ़ानी' को दुखवादी बनाने में उनकी बाद की असफलताओं का इतना हाथ नहीं था जितना कि पिता की ज़बर्दस्ती से पैदा हुई कुंठा का था। सोचने की बात है कि

जिस व्यक्ति की काव्य-चेतना बचपन ही में इतनी मुखर हो हो गयी हो कि वह ग्यारह वर्ष की ही अवस्था में ग़ज़ल लिखने लगे और पिता का इतना सख़्त दबाव हो कि उसे चोरी-चोरी काव्य-साधना करनी पड़े उसका मानसिक झुकाव निराशा की ओर नहीं होगा तो क्या होगा। बचपन में उन्होंने 'दाग़' के पास डाक से एक ग़ज़ल भेजी। वह इस्लाह के बाद वापस आयी तो उनके पिता को मालूम हुआ और उन्होंने उनकी अच्छी तरह ख़बर ली। इसके बाद यह सिलसिला भी बंद हो गया। वकालत पढ़ने के ज़माने में यह चख़चख़ जब बहुत बढ़ी तो उन्होंने झुँझला कर १६०६ में शेर कहना भी छोड़ दिया और १६१७ तक बिल्कुल चुप्पी साधे रहे।

इस अरसे में उन्होंने वकालत की तरफ़ तवज्जह की और बरेली के बाद लखनऊ में प्रैक्टिस शुरू की, लेकिन इस पेशे में उनकी तबियत बिल्कुल नहीं लगती थी। १६१७ में फिर काव्य-साधना आरंभ की तो वकालत पर और भी कम ध्यान देने लगे। इसी बीच उनकी पत्नी का भी देहांत हो गया। प्रैक्टिस गिर रही थी। 'फ़ानी' ने १६२३ ई० में आगरे में प्रैक्टिस शुरू की। लेकिन वकालत में उन्हें सफलता न मिलनी थी न मिली। आगरे में उन्होंने एक दूसरे प्रख्यात साहित्यिक 'मानी' के साथ एक पत्रिका 'तसनीम' निकाली। पत्रिका का स्तर इतना ऊँचा था कि व्यावसायिक दृष्टि से वह भी असफल रही और १६३२ ई० में वह बंद हो गई।

'फ़ानी' अब जीविका की खोज में हैदराबाद पहुँचे। वहाँ के प्रधानमन्त्री महाराजा सर किशन प्रसाद 'शाद' उनके प्रशंसक

और समर्थक थे, किन्तु कुछ तो दरबारी शिष्टाचार के अनभ्यस्त होने और कुछ अन्य प्रतिद्वंद्वियों की चालों और मित्रों की धोखेबाज़ी के कारण बड़ी मुश्किल से उन्हें एक स्कूल की हैडमास्टरी मिली। मरने के कुछ दिन पहले उनकी यह नौकरी भी छूट गयी। २६ अगस्त १६४० ई० की शाम को उनका देहावसान हो गया।

यह स्पष्ट है कि 'फ़ानी' की उम्र दिक्क़तों में गुज़री। लेकिन यह कहना सही नहीं है कि इन दिक्क़तों ने उन्हें निराशा-वादी बना दिया था। एक प्रकार से दुखवादी तो वे अपनी नौजवानी से ही थे जबकि जीवन की कठिनाइयों का कोई प्रश्न ही न था। उन्होंने अपने मन को संसार से इतना विरक्त कर लिया था कि अपने दोस्तों की धोखेबाज़ी की शिकायत कविता के भी परदे में उनकी ज़बान से न निकली। उनके सारे काव्य को पढ़ जाइए। दुख-प्रियता तो उनमें बहुत मिलेगी, किन्तु उसमें किसी प्रकार की कुढ़न और खीझ के दर्शन न होंगे। जीवन के कटु अनुभवों से प्रभावित होने वाले व्यक्ति कुढ़न और खीझ से अपना दामन नहीं बचा सकते।

उनकी दुख-प्रियता का मनोवैज्ञानिक आधार ढूंढने के लिए न हमारे पास अभी यथेष्ट सामग्री है (उनके बचपन के क़िस्से बताने वाला अब कोई नहीं), न इस अवसर पर उसकी आवश्यकता ही है। यही समझ लेना काफ़ी है कि वे भी 'ग़ालिब' की भाँति जीवन की कठिनाइयों को तुच्छ समझते थे। 'ग़ालिब' साथ-साथ हँसते भी जाते थे, 'फ़ानी' को इसकी भी ज़रूरत महसूस न हुई।

'फ़ानी' ने तीन-चार दीवान, तीन मसनवियां और दो नाटक लिखे। किन्तु उनकी रचनाओं का बहुत बड़ा भाग खो गया है। कविताओं का साधारण-सा संग्रह है जो उनके ज़माने में कई भागों में था और उनकी मृत्यु के पश्चात् 'कुल्लियाते-फ़ानी' के नाम से इकट्ठा प्रकाशित हुआ है।

'फ़ानी' की दार्शनिक पृष्ठभूमि

'फ़ानी' को उर्दू के प्रसिद्ध आलोचक प्रो० रशीद अहमद सिद्दीक़ी ने 'यासियात का इमाम' कहा है यानी 'निराशावाद के नायक'। 'फ़िराक़' गोरखपुरी के शब्दों में उनकी कविता में 'रोना-बिसूरना' बहुत है। 'जोश' मलीहाबादी उन्हें इंसानियत से गिरा हुआ कहते हैं क्योंकि जो व्यक्ति जीवन के संघर्षों का हँस-हँसकर सामना न कर सका हो वह इन्सान कैसा? और 'फ़ानी' हैं कि कहते हैं :—

वाहमे की ये मश्क़े-पैहम क्या
यासो-उम्मीदो-शादी-ओ-ग़म क्या

या फिर कहते हैं :—

कोई वजहे-तस्कीं नहीं ग़म न राहत
ख़ुदा जाने 'फ़ानी' मैं क्या चाहता हूं

इस दृष्टिकोण से उनकी कविता को शुरू से आख़िर तक देख जाइए कि उनका दुखवाद जीवन की निराशाओं के फल-स्वरूप पैदा हुआ है, आपको निराशा ही हाथ लगेगी। जो विचारक दिल की बेचैनी ही को राहत समझता है उसे निराशा-वादी कैसे कहा जा सकता है? वे तो कहते हैं :—

राहत का मक़दूम यही है जहदे-तलब से बाज़ न आ
बढ़ने दे दिल की बेचैनी, तड़पे जा, आराम न ले

यदि हम 'फ़ानी' को अपने विशेष दृष्टिकोण से देखकर उलझन न पैदा करना चाहें तो हमें 'फ़ानी' की विचारधारा को उन्हीं की रचनाओं में खोजना पड़ेगा और निष्पक्ष रूप से—उन्हीं के शब्दों में—उनके विचारों को पढ़ना पड़ेगा, भले ही इनसे उनकी कोई ऐसी तसवीर उभरे जिसे हम पसंद न करें।

चुनांचे उनके विभिन्न शेरों में प्रदर्शित भावों की रेखाओं को ठीक तरह से जोड़कर लगाने से उनकी विचारधारा का निम्नलिखित चित्र उभरता है :

पहली बात जो उनके कलाम पर एक सरसरी नज़र डालने से दिखाई देती है वह उनका सूफ़ीवाद है। बीसवीं सदी में इस विचारधारा को उस्ताद 'शाद' अज़ीमाबादी ने आरंभ किया। 'शाद' अट्ठारहवीं शताब्दी के फ़क़ीर शायर ख़्वाजा मीर 'दर्द' से बहुत प्रभावित थे। किन्तु दरअस्ल जिस कवि ने इस विचारधारा को निखारकर इसमें बेपनाह मस्ती भर दी वह हज़रत 'असग़र' गौंडवी थे जिनका एक-एक शेर सुनने वालों को एक मस्ती की दुनिया में (भले ही आप उसको अवास्तविक कहलें) पहुंचा देता है। 'असग़र' साहब से 'जिगर' मुरादाबादी और 'फ़ानी' बदायूनी दोनों अलग अलग ढंग से प्रभावित हुए। 'असग़र' ने सूफ़ीवाद की आनंददायिनी मस्ती को देखा, 'जिगर' ने उससे तड़प और बेचैनी के प्रदर्शन के लिए प्रेरणा ली और 'फ़ानी' ने उससे दुखवाद को लिया। सूफ़ीवाद का सार यह है कि संसार की विभिन्नता एक धोखा है, समस्त विभिन्न दिखाई

देने वाली इकाइयां एक प्रेरक शक्ति ही के अंग हैं जिन्हें उस शक्ति ने प्रेम के जोश को उभारने के लिए अपने से अलग किया है। प्रेम ही के द्वारा यह अलग (या अलग मालूम होने वाला) अंग उस एक बड़ी इकाई में मिल सकता है और जीवन की हलचल समाप्त हो जाती है। यह विचारधारा भारतीय वेदांत से मेल खाती है।

अब यह देखिए कि 'फ़ानी' ने इस विचारधारा को किस रूप में ग्रहण किया है :—

वह यहीं है जो वह कहीं भी नहीं
आइए दिल में जुस्तजू तो करें

◇ ◇ ◇

दिल की हर लरज़िशे-मुज़तर पे नज़र रखते हैं
वह मेरी बेख़बरी की भी खबर रखते हैं

◇ ◇ ◇

उनकी आवाज़ आ रही थी दिल के पास
देर तक कुछ गुफ़्तगू करते रहे

◇ ◇ ◇

उस नूरे-मुजस्सम के अफ़साने को क्या कहिए
है शमअ़ भी परवाना परवाने को क्या कहिए

चुनांचे 'फ़ानी' पूरी तरह सूफ़ीवादी हैं और वह भी सूफ़ीवाद की चरमसीमा पर पहुंचे हुए मालूम होते हैं। वे उसके प्रथम चरण यानी भौतिक प्रेम को नहीं छू पाते—जैसा कि 'जिगर' और कुछ शेरों में 'असग़र' ने भी किया है। वे प्रेम को उसकी भौतिक सीमाओं में नहीं देखते। उनका प्रियतम

हाड़-मांस का पुतला कभी नहीं हो पाता। दरअस्ल संसार में उन्हें प्रेमी ही प्रेमी दिखाई देते हैं, प्रियतम कोई नहीं। वास्तव में यह समझ में आने वाली बात नहीं है कि कोई सूफ़ी भी भौतिक प्रेम का अनुभव किये बिना आध्यात्मिक प्रेम को कैसे प्राप्त कर सकता है, सीमित की उपेक्षा करके असीम की ओर कैसे बढ़ सकता है? संभव है 'फ़ानी' की प्रारंभिक रचनाओं में (जो अब अप्राप्य हैं) भौतिक प्रेम की बातें की गई हों। किन्तु उनकी वर्तमान रचनाओं में तो हमें यह तक देखने को नहीं मिलता कि भौतिक सौंदर्य निस्सार है। वे तो इस बात पर बहस ही नहीं करना चाहते कि भौतिक सौंदर्य कुछ है भी या नहीं। उन्हें यह विश्वास है कि संसार में केवल प्रेमी ही प्रेमी हैं, प्रियतम तो कोई और ही है जिसे दिल में ढूंढा जा सकता है।

हर दिल है तेरे ग़म की अमानत लिये हुए
ज़र्रे हैं इक जहाने-हक़ीक़त लिये हुए

◇ ◇ ◇

एक आलम को देखता हूं मैं
यह तेरा ध्यान है मुजस्सम क्या

चुनांचे जब संसार प्रेम ही प्रेम है तो फिर उसमें और कुछ तलाश ही करना बेकार है। ऐसी स्थिति में प्रेम की आख़िरी मंज़िल ही हमें दिखाई दे सकती है। इसी जगह पर 'फ़ानी' अन्य कवियों से अलग अपना विशिष्ट स्थान बना लेते हैं। वे प्रेम की आख़िरी मंज़िल दुख को समझते हैं। शायद कुछ ऐसा ग़लत भी नहीं समझते। प्रेम बहुत बढ़ जाने पर सुख का तो नाम भी नहीं रहता, एक स्थिति ऐसी भी आती है जब कि तड़प

भी बाक़ी नहीं रहती, एक असीम उदासी, समझ में न आने वाली उदासी घेर लेती है। 'फ़ानी' के यहां इसी असीम निरपेक्ष उदासी के, जो आध्यात्मिक प्रेम की परमावस्था के दर्शन कराती है, गीत बहुलता से मिलते हैं। उदाहरणार्थ :—

कमाले-होश है यूं बेनियाज़े-होश हो जाना
तेरे आग़ोश में बेगाना-ए-आग़ोश हो जाना

यानी प्रिय की कृपा कृपा ही नहीं मालूम होती। या फिर प्रिय की इच्छा ही यह है कि मैं दुख में डूबा रहूं इसलिए मुझे सुख की बात भी नहीं सोचनी चाहिए। मुहब्बत का तक़ाज़ा तो प्रिय की इच्छा पर चलना ही है :—

मेरी आंखों से बहना चाहिए दिल का लहू बरसों
रही है उनको ख़ूने-आरज़ू की आरज़ू बरसों

और 'फ़ानी' बाद में एक ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हैं जहां उन्हें दुख ही दुख का बोध रहता है, दुख का कारण भी भूल जाते हैं :—

दिल वक़्फ़े-तपिश है, हाय, मगर वजहे-तपिशे-दिल कोई नहीं
बिस्मिल हूं मगर क्यों बिस्मिल हूं फ़रियाद कि क़ातिल कोई नहीं

प्रेम-जन्य दुख का एक अनिवार्य पहलू यह होता है कि प्रेमी इस दुख ही को अपनी धरोहर समझने लगता है :—

'फ़ानी' वो बलाकश हूं ग़म भी मुझे राहत है
मैंने ग़मे-हस्ती की सूरत भी न पहचानी

◇ ◇ ◇

'फ़ानी' इस प्रेमजन्य दुख की किस मंज़िल पर हैं इसका विवेचन करने से पहले हमें संसार, जीवन और मृत्यु के बारे में

भी उनके दृष्टिकोण से अवगत हो जाना चाहिए तभी हम उनके दुखवाद को अच्छी तरह समझ सकेंगे ।

'फ़ानी' स्पष्टतः भाग्यवादी हैं । उनका विचार है कि मनुष्य वही करता है जो कि परमप्रिय (ईश्वर) की इच्छा होती है । उसके हाथ में अपना भाग्य निर्माण करना नहीं है । कहते हैं :

जिस्मे-आज़ादी में फूंकी तूने मजबूरी की रूह
ख़ैर, जो चाहा किया, अब यह बता हम क्या करें

◇ ◇ ◇

देख 'फ़ानी' वह तेरी तदबीर की मय्यत न हो
इक जनाज़ा जा रहा है दोश पर तक़दीर के

◇ ◇ ◇

जो होना है होके रहेगा मजबूरी की हद से न बढ़
बैठे-बिठाये अपने सर आज़ादी का इल्ज़ाम न ले

◇ ◇ ◇

'फ़ानी' के विचार में हम इतने मजबूर हैं कि पाप भी करने में समर्थ नहीं । यह तो ईश्वर की अनुकम्पा है कि हमारी मजबूरी को आज़ादी का ऐसा आवरण दे दिया है कि हम पाप करके अपने अलग व्यक्तित्व को मनवा सकते हैं । पाप करने की सामर्थ्य की इतनी सुंदर व्याख्या और किसने की है :—

मजबूरी-ए-उरियां को यह ख़िलअ़ते-मुख़्तारी
अल्ला रे करम, हम और तौफ़ीक़े-गुनहगारी

जब मनुष्य ही अपने बल पर नहीं बल्कि किसी के चलाने पर चल रहा है तो स्पष्ट है कि संसार और उसके जीवन की कोई ठोस हक़ीक़त नहीं । अब यह स्पष्ट हो जाता है कि

'फ़ानी' के दुखवाद का आधार क्या है। संसार अपनी जगह कुछ भी नहीं फिर भी हम इसमें रहने के लिए मजबूर हैं। जब तक संसार को कोई सत्य समझता रहेगा तब तक यहां की भूल-भुलैयां में फंसा रहेगा, यहां के दुख से दुखी और सुख से सुखी रहेगा। संसार की असारता और इसलिए उससे विरक्ति की बातें बहुतों ने की हैं, किन्तु संसार को असार समझने पर भी उसे छोड़ न पाने की विवशता को भी उभार कर रखा जाय तो 'फ़ानी' जैसा दुखवाद ही पैदा हो सकता है। संसार की असारता के बारे में उनके शेर देखिए :—

फ़रेबे-जल्वा और कितना मुकम्मल ऐ मुआज़-अल्ला
बड़ी मुश्किल से दिल को बज़्मे-आलम से उठा पाया

◇ ◇ ◇

बिजलियों से ग़ुरबत में कुछ भरम तो बाक़ी है
जल गया मकां यानी कोई था मकां अपना

और जीवन तथा मृत्यु की अस्लियत तो और भी ख़याली है। 'फ़ानी' जीवन को भ्रमपूर्ण बताते हैं, एक उलझन से अधिक महत्व नहीं देते :—

इक मुअम्मा है समझने का न समझाने का
ज़िन्दगी काहे को है ख़्वाब है दीवाने का

◇ ◇ ◇

न इब्तदा की ख़बर है न इन्तहा मालूम
रहा ये वह्म कि हम हैं सो वह भी क्या मालूम

◇ ◇ ◇

ख़ैर, यहां तक तो ग़नीमत था कि 'फ़ानी' जीवन को मिथ्या

और भ्रमपूर्ण कहते, कभी-कभी तो वे कहने लगते हैं कि जब जीवन है ही नहीं तो मिथ्या जीवन की बात करना तथा सत्य और मिथ्या में भेद करना भी ग़लत है :—

हस्ती ही नहीं जो बातिल हो फिर फ़र्क़े-मजाज़ो-हक़ीक़त क्या
ये मजाज़े-हक़ीक़त भी है हक़ीक़त, हस्तीए-बातिल कोई नहीं

'फ़ानी' इस स्थान पर दार्शनिक के रूप में बहुत ऊंचे उठ गये हैं। जीवन को मिथ्या मानकर भी उसे अपने मिथ्या रूप ही में सत्य साबित कर देना 'फ़ानी' जैसे ही विचारक कवि के बस की बात थी।

लेकिन फिर भी जीवन की अयथार्थता का बोध जीवन से उचाट बना देने के लिए काफ़ी है। यह याद रखना चाहिए कि 'फ़ानी' जीवन में सिवाय इसके और कोई उद्देश्य नहीं देखते कि उसे प्रियतम के प्रेम में लय कर दिया जाय। वे 'असग़र' की तरह हस्ती को 'सादा हक़ीक़त' भी नहीं समझते जो "रंगीन निगाहों ने रंगीन बना डाली" हो। वे उसे "दीवाने का ख्वाब" कहते हैं। ऐसी स्थिति में जीवन से ऊब और मृत्यु की इच्छा स्वाभाविक ही है :—

तू कहां थी, ऐ अजल ! ऐ नामुरादों की मुराद
मरनेवाले राह तेरी उम्र भर देखा किये

◇ ◇ ◇

अच्छा यह तो माना कि जीवन की अपनी जगह कोई वास्तविकता नहीं है और सत्य का बोध होने पर निराशा भी स्वाभाविक ही है। किन्तु क्या इसी पर कहानी ख़त्म कर दी जाय और ख़य्याम की भांति उसकी निस्सारता और क्षण-

भंगुरता ही को शराब में डूबने का आधार बना लिया जाय। 'फ़ानी' इस प्रश्न पर फिर पक्के सूफ़ी हो जाते हैं और 'जिगर' के काफ़ी क़रीब आ जाते हैं :—

इन्सान की सारी हस्ती का मक़सूद है 'फ़ानी' एक नज़र
यानी वो नज़र जो दिल में उतर कर ज़ख़्म बनी मरहम न हुई

◇ ◇ ◇

और इसी एक नज़र के लिए 'फ़ानी' का सारा जीवन—सृष्टि का सारा जीवन—बेचैन है।

इस प्रेम की हलचल में 'फ़ानी' अपने विशिष्ट दृष्टिकोण के कारण निराशा का ही पहलू निकालते हैं और दुख ही को जीवन का सार समझते हैं। किन्तु उनका यह दुख़वाद अपने को मिटाने की तो प्रेरणा देता है, अपने को हेय समझने की नहीं। कभी-कभी अनजाने ही उनके मुंह से प्रेमी के महत्व की बात (जिस पर ज़ोर देने में 'जिगर' कमाल करते हैं) कह जाते हैं :—

जल रहे हैं आज तक दिल के चिराग़
तूर पर इक शमअ़ जल कर रह गयी

◇ ◇ ◇

जल्वा बे-चश्मे-आशना क्या है
मैं ही मैं हूं मेरे सिवा क्या है

◇ ◇ ◇

किन्तु जैसा पहले कहा जा चुका है वे जीवन का उद्देश्य दुख—स्पष्टतः ही यह केवल प्रेम-जन्य दुख हो सकता है—मानते हैं। कहते हैं :—

ये ज़िन्दगी की है रूदादे-मुख़्तसर 'फ़ानी'
वजूदे-दर्द मुसल्लम, इलाज नामालूम

◇ ◇ ◇

राहत का मफ़हूम यही है जहदे-तलब से बाज़ न आ
बढ़ने दे दिल की बेचैनी, तड़पे जा, आराम न ले

◇ ◇ ◇

तो 'फ़ानी' के दुखवाद की यह पृष्ठ-भूमि है। इसी पृष्ठ-भूमि में रखकर उनके द्वारा प्रयुक्त रूपकों की भी व्याख्या होनी चाहिए। उदाहरणार्थ उनके क़ैदखाने का अर्थ संसार, वतन का अर्थ ईश्वर में विलीनता, परदेश का अर्थ संसार, ग़म का अर्थ ईश-प्रेम की पराकाष्ठा आदि समझना चाहिए। यूं उनके दुखवाद को निराशा कहने वालों, ग़म को सांसारिक दुख समझने वालों, आज़ादी और क़ैद को देश की राजनीतिक परतन्त्रता और (उस समय केवल संभाव्य) स्वतन्त्रता बताने वालों का मुंह कोई रोक नहीं सकता। हां 'फ़ानी' को उन्हीं की विचार-धारा पर आगे बढ़कर देखा और समझा जा सकता है। उन्होंने कह भी तो दिया है :—

अहले-दुनिया मुझे समझ लेंगे
दिल किसी दिन ज़रा लहू तो करें

◇ ◇ ◇

काव्य-सौन्दर्य

किसी साहित्यकार की विचारधारा उसके द्वारा रचित साहित्य की उत्कृष्टता का मापदंड भी नहीं हुआ करती। यह बिल्कुल संभव है कि हम किसी साहित्यकार की विचारधारा

से बिल्कुल सहमत हों किन्तु उसके साहित्य को बिल्कुल फुस-फुसा समझें। इसके विपरीत बहुधा ऐसा भी होता है कि कोई कवि अपनी विचारधारा के प्रति हममें बिल्कुल सहानुभूति न पैदा कर सके किन्तु जब वह अपनी उसी विचारधारा को अपने दिल की तड़प के साथ कलापूर्ण ढंग से सामने रखे तो हम ख्वामख्वाह वाह-वाह करने के लिए मजबूर हो जायं। 'फ़ानी' के लिए भी यही बात कही जा सकती है।

'फ़ानी' मुख्यतः ग़ज़लगो शायर हैं। ग़ज़ल की आधार-भूमि प्रेम है। प्रेम का स्वाभाविक परिणाम कोमलता और करुणा हैं। जैसे-जैसे प्रेम का स्तर बढ़ता जाता है वैसे-वैसे ही उसका चित्रण करने वाली ग़ज़ल का स्तर भी ऊंचा होता जाता है। मनुष्य किसी सुन्दर वस्तु को देखता है तो उसकी सुन्दरता में मग्न हो जाता है। यह प्रेम का आरंभ है। इस दशा का चित्रण करने वाली ग़ज़लों की संख्या बहुत अधिक है, क्योंकि इस स्थिति का गहरा अनुभव प्रत्येक कवि को होता है। सौंदर्य को प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा और इसमें सफल न होने पर पैदा होने वाली खीझ प्रत्येक प्रेमी में होती है। चुनांचे इस स्थिति का चित्रण करने वाली ग़ज़लों की संख्या सबसे अधिक है। इसके बाद की स्थिति वह होती है जिसमें प्रेमी को प्रेम ही आनंद देने लगता है। इस स्थिति का चित्रण करने वाली ग़ज़लें उच्चकोटि की समझी जाती हैं, उदाहरणार्थ 'शाद' अज़ीमाबादी, 'असग़र' गौंडवी और 'जिगर' मुरादाबादी की ग़ज़लें। इसके आगे वह स्थिति आती है जब इस प्रेम-जन्य आनन्द का स्थान एक अज्ञात विषाद, एक अकारण दुख ले लेता है। इस

स्थिति में आदमी भरा बैठा रहता है। कैसी भी—किसी कारण भी—ज़रा सी ठेस लगी और वह रोने लगा। उसे यह भी याद नहीं रहता कि मैं क्यों रो रहा हूं। 'ग़ालिब' ने लिखा भी है :—

पुर हूं मैं शिकवे से यूं राग से जैसे बाजा
इक ज़रा छेड़िए फिर देखिए क्या होता है

'मीर' कहते हैं :—

रात हैरान हूं कुछ चुप ही मुझे लग गयी 'मीर'
दर्दे-पिनहां थे बहुत पर लबे-इज़हार न था

'मीर', 'ग़ालिब' और 'फ़ानी' की ग़ज़लों में हमें इसी असीम वेदना के दर्शन होते हैं। तारीफ़ की बात यह है कि हम में चाहे स्वयं यह वेदना उभरी न हो लेकिन इन कवियों की दर्द-भरी तानों को जब हम सुनते हैं तो हमारे दिल के तारों पर भी चोट लगती है और हमारा छुपा हुआ दर्द भी उभर कर सामने आने लगता है। यही वजह है कि तर्क की दृष्टि से जो कविता हमें अस्वस्थ और अशक्त दिखायी देती है वह भी हमारी दिल की दुनिया में वह तूफ़ान उठा जाती है कि हमें उसकी किसी-न-किसी रूप में प्रशंसा करने के लिए विवश कर देती है। 'फ़ानी' की कविता में हमें यह चीज़ साफ़-साफ़ दिखाई देती है कि उसमें कोई 'नयी' बात नहीं कही गयी, शब्दों का चमत्कार नहीं दिखाया गया, रूपकों, उपमाओं तथा अन्य अलंकारों की भरमार नहीं की गयी, बिल्कुल सीधी-सादी बात कह दी गयी, लेकिन इस तरह कही गयी है जैसे कि दिल से उठने वाली आह के साथ कुछ शब्द बाहर आ गये हों और

उन शब्दों में दुखी हृदय के अंतरतम की तसवीर उभर रही हो। उदाहरणार्थ 'फ़ानी' की निम्नलिखित ग़ज़ल को देखिए—

ज़ब्त अपना शुआ़र था, न रहा,
दिल पे कुछ इख़्तियार था, न रहा।
उनकी बेमेहरियों को क्या मालूम,
कोई उम्मीदवार था, न रहा।
... ...

रदीफ़ के दो शब्दों 'न रहा' में बेपनाह दर्द भरा हुआ है जो सहृदय पाठकों के अंतरतम तक को छूने में समर्थ होगा। 'फ़ानी' के ऐसे शेरों को देखकर 'ग़ालिब' की बेइख़्तियार याद आती है जो बग़ैर यह कहे हुए कि "हाय मैं बड़ा दुखी हूं" श्रोताओं के मन को सीधे-सादे शब्दों में द्रवित कर देते थे। उदाहरणार्थ :—

कोई उम्मीद बर नहीं आती
कोई सूरत नज़र नहीं आती

इस सादगी के साथ दर्द पैदा कर देने में 'मोमिन' भी सिद्धहस्त थे। यद्यपि उन्होंने जीवन के कारुणिक पहलू पर 'ग़लिब' और 'मीर' की तरह ज़ोर नहीं दिया, फिर भी इस रंग में उन्होंने जो भी शेर कहे हैं वे लाजवाब हैं।

'फ़ानी' ने इस सादाबयानी के अलावा—जो उर्दू कविता में बहुत ऊंचा स्थान रखती है—अक्सर पुरानी घिसी-घिसायी उपमाओं, रूपकों आदि का भी सहारा लिया है किन्तु अपने दर्दमंद दिल से उन्होंने उनमें भी जादू का-सा असर पैदा कर दिया है। हमें इन ग़ज़लों को पढ़ते समय उनकी उपमाओं,

रूपकों आदि के नये, पुरानेपन का बोध तक नहीं हो पाता। काव्य-शैली पर विचार करने के पहले ही हम दुख-सागर में 'फ़ानी' के साथ बहने लगते हैं। उदाहरणार्थ कुछ शेर देखिए :—

मश्आले-सोज़े-ग़महाए-निहानी देखते जाओ
भड़क उट्ठी है शमअ-ज़िंदगानी देखते जाओ
सुने जाते न थे तुम से मेरे दिन-रात के शिकवे
कफ़न सरकाओ, मेरी बेज़बानी देखते जाओ
ग़रूरे-हुस्न का सदक़ा कोई जाता है दुनिया से
किसी की ख़ाक में मिलती जवानी देखते जाओ

◇ ◇ ◇

गंभीरतम दार्शनिक समस्याओं को सीधे-सादे शब्दों और वाक्य-विन्यास के साथ पूरी तरह उभार कर रख देना भी 'फ़ानी' की बहुत बड़ी विशेषता है। निम्नलिखित शेरों को पढ़िए और आनंद लीजिए। व्याख्या की आवश्यकता ही नहीं।

ज़िन्दगी की दूसरी करवट थी मौत
ज़िन्दगी करवट बदल कर रह गयी

◇ ◇ ◇

हर सांस के साथ जा रहा हूं
मैं तेरे क़रीब आ रहा हूं

लेकिन कभी-कभी कुछ अपरम्परावादी तरीक़े से भी वे दार्शनिक समस्याएं सामने रखते हैं। ऐसे मौक़ों पर वे 'ग़ालिब' की-सी भाषा बोलने लगते हैं। उदाहरणार्थ :—

हद पे जब पहुंची नज़र हद्दे-नज़र आगे बढ़ी
जो नज़र आया ज़ियादा कम नज़र आया मुझे

◇ ◇ ◇

बिजलियों से गुरबत में कुछ भरम तो बाक़ी है
जल गया मकां यानी कोई था मकां अपना

◇ ◇ ◇

ख़ून के छींटों से कुछ फूलों के ख़ाके ही सही
मौसमे-गुल आ गया ज़िन्दां में बैठे क्या करें

लेकिन 'फ़ानी' दरअस्ल 'फ़ानी' वहीं होते हैं जहां वे हर तरह के बंधनों से आज़ाद होकर अपने ग़म को ख़ालिस ग़म की सूरत में पेश करते हैं। ऐसे मौक़ों पर वे 'मीर' के क़रीब जा पहुंचते हैं और शेरों में बेपनाह दर्द भर देते हैं। ऊपर जितने उदाहरण दिये गये हैं उनमें दर्द के अलावा और भी कुछ गुण मौजूद हैं—चाहे वे भाषा के हों चाहे शैली के। किन्तु निम्न-लिखित शेरों में सिवाय ग़म के बहाव के और कोई गुण नहीं है; किन्तु वही एक गुण ऐसा है जो 'फ़ानी' की कविता को अन्य कविताओं से अलग कर देता है।

आज़ादी भी देखी है वीराने भी देखे हैं
जो उजड़े और फिर न बसे दिल वो निराली बस्ती है

◇ ◇ ◇

शौक़ से नाकामी की बदौलत कूचाए-दिल भी छूट गया
सारी उमीदें टूट गयीं दिल बैठ गया जी छूट गया
'फ़ानी' हम तो जीते जी वह मय्यत हैं बे-गोरो-कफ़न
गुरबत जिसको रास न आयी और वतन भी छूट गया

कभी-कभी तो मानव-जीवन की वास्तविकताओं का— ऐसी वास्तविकताओं का जिनसे किसी के असहमत होने का सवाल ही नहीं पैदा होता—चित्रण इस सादगी, सफ़ाई और खूबसूरती से करते हैं कि सिवाए 'मीर' के और कोई उनके मुक़ाबले पर ठहर ही नहीं पाता—

नींद थी चश्मे-नाज़ में 'फ़ानी'
एक बे-ख़्वाब की कहानी तक

◇ ◇ ◇

किस ज़ोम में है ऐ रहरवे-ग़म धोखे में न आना मंज़िल के
यह राह बहुत कुछ छानी है इस राह में मंज़िल कोई नहीं

नज़्में और रुबाइयां

'फ़ानी' मुख्यतः ग़ज़लगो शायर हैं। उनकी ग़ज़लों की संख्या भी नज़्मों से कहीं अधिक है और काव्य-गुण तो केवल ग़ज़लों ही में दिखाई देता है। उनकी नज़्में अधिकतर रस्मी क़िस्म की हैं जो या तो प्रारंभिक काल में लिखी गयी हैं या हैदराबाद के आवासकाल में क़सीदों आदि के रूप में लिखी गयी हैं। इन नज़्मों में ईश्वर की प्रशस्ति, संसार की क्षण-भंगुरता, उर्दू की तारीफ़ आदि के विषय हैं। काव्य-गुण के लिहाज़ से अगर ये नज़्में तृतीय श्रेणी की नहीं हैं तो प्रथम श्रेणी की भी नहीं हैं। (प्रस्तुत संग्रह में 'फ़ानी' की नज़्मों और क़सीदों को स्थान नहीं दिया गया)।

किन्तु 'फ़ानी' की रुबाइयों के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। यद्यपि इन रुबाइयों की कुल संख्या ८४ है (जिनमें

से कुछ इस संग्रह में दी गयी हैं), और मात्रा के लिहाज़ से इनका कोई महत्व नहीं है किन्तु विषय के अनूठेपन और काव्य-गुणों की उत्कृष्टता की दृष्टि से ये उर्दू की अच्छी रुबाइयों में गिनी जा सकती हैं।

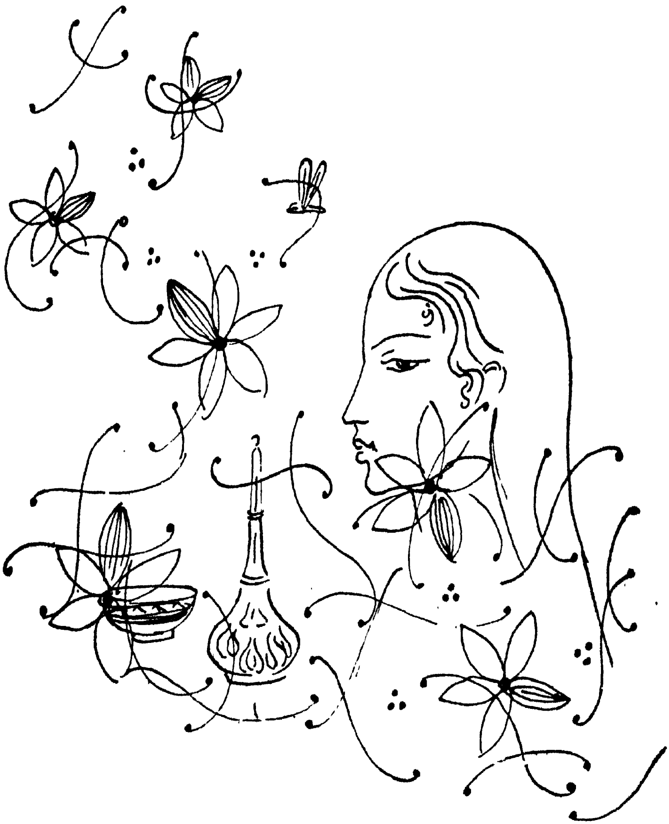
इन रुबाइयों का मुख्य विषय भी ग़ज़लों की भांति दुख का प्रदर्शन और संसार की नश्वरता का वर्णन है किन्तु कहीं-कहीं कल्पना की कोमल उड़ान बहुत ही मनोहारिणी हो उठी है। उदाहरणार्थ निम्नलिखित रुबाई देखिए :—

ऐ फ़ित्नाए-रोज़गार ! आहिस्ता गुज़र
आशोबे-दिले-फ़िगार ! आहिस्ता गुज़र
नाज़ुक है बहुत दिमाग़े-अरबाबे-जुनूं
ऐ नकहते-ज़ुल्फ़े-यार ! आहिस्ता गुज़र

'फ़ानी' को सभी रंजो-ग़म का शायर मानते हैं। ठीक भी है। उनका जीवन-दर्शन भी यही था। किन्तु हमें उनकी रचनाओं में कहीं-कहीं ऐसी चीज़ें भी मिल जाती हैं जिनसे मालूम होता है कि आत्म-विश्वास की महत्ता और मानवता का सम्मान उनके हृदय में बहुत था।
उदाहरणार्थ निम्नलिखित रुबाई देखिये :—

तकमीले-बशर नहीं है सुल्तां होना
या सफ़ में फ़रिश्तों की नुमायां होना
तकमील है अज्ज़े-बंदगी का एहसास
इंसान की मेराज है इंसां होना

चयन



ग़ज़लें

यां होश से बेज़ार[1] हुआ भी नहीं जाता
इस बज़्म[2] में हुशियार हुआ भी नहीं जाता
कहते हो कि हम वादाए-पुरसिश[3] नहीं करते
यह सुन के तो बीमार हुआ भी नहीं जाता
जाते हुए खाते हो मेरी जान की क़समें
अब जान से बेज़ार हुआ भी नहीं जाता
ग़म क्या है अगर मंज़िले-जानां[4] है बहुत दूर
क्या ख़ाके-रहे-यार[5] हुआ भी नहीं जाता

◇ ◇ ◇

होशे-मस्ती से तो बेगाना बनाया होता
काश तूने मुझे दीवाना बनाया होता
दिल में इक शमा-सी जलती नज़र आती है मुझे
आके इस शमा को परवाना बनाया होता

१. अधीर २. सभा ३. हाल पूछने का वादा ४. प्रिय का स्थान ५. प्रिय के मार्ग की धूल

दर्द देकर दिले-'फ़ानी' को मिटा देना था
इस हक़ीक़त को भी अफ़साना बनाया होता

◇ ◇ ◇

उनको शबाब का न मुझे दिल का होश था
इक जोश था कि मह्व-तमाशाए-जोश[1] था
बरपा था दिल की लाश पे इक महशरे-सकूत[2]
तेरे शहीदे-नाज़[3] का मातम खमोश था
उम्मीदे-अफ़्व[4] है तेरे इंसाफ़ से मुझे
शाहिद[5] है खुद गुनाह कि तू परदा-पोश था
वहशत ब-क़ैदे-चाके-गरेबां[6] रवा नहीं
दीवाना था जो मोतक़िदे-अहले-होश[7] था
पी और वो पी अजल[8] में कि उतरी न हश्र तक
यादश-बख़ैर[9], दिल भी अजब बादा-नोश[10] था
'फ़ानी' तुनक-बजाअतीए-ग़म[11] का क्या इलाज
हर क़तरा ख़ूने-दिल का तमन्ना-फ़रोश[12] था

◇ ◇ ◇

१. जोश का तमाशा देखता हुआ २. मौन की प्रलय ३. प्रेम का मारा ४. क्षमा की आशा ५. गवाह ६. कपड़ा फाड़ने की शर्त के साथ ७. होश वालों को मानने वाला ८. आदि-दिवस ९. उसकी याद रहे १०. शराबी ११. दुख की अल्प शक्ति १२. कामना का व्यापारी

दुनियाए-हुस्नो-इश्क़ में किसका ज़हूर[1] था
हर आँख बर्क़-पाश[2] थी हर ज़र्रा तूर था
मेरी नज़र की आड़ में उनका ज़हूर था
अल्लाह ! उनके नूर का परदा भी नूर था
हम कुश्तगाने-ग़म[3] पे ये इल्ज़ामे-ज़िन्दगी
बे-मेह्र ![4] कुछ तो पासे-हक़ीक़त[5] ज़रूर था
बालीं[6] पे जब तुम आये तो आयी वो मौत भी
जिस मौत के लिए मुझे जीना ज़रूर था
उठकर चले तो हश्र भी उठना था क्या ज़रूर
उनकी गली से मदफ़ने-'फ़ानी'[7] तो दूर था

◇ ◇ ◇

ख़ूने-नाहक़ का गिला[8] था कुछ अदब का जोश था
लाश की सूरत ज़बां थी और मैं ख़ामोश था
नूरे-बर्क़े-मारफ़त[9] बख़्शा दिले-आगाह[10] ने
वरना पहले सोज़े-ग़म[11] इक शोलाए-बेहोश[12] था
इश्क़ की दुनियां ज़मीं से आसमां तक शौक़ थी
था जो कुछ तेरे सिवा आग़ोश[13] ही आग़ोश था

१. प्रकट होना २. बिजली गिराने वाली ३. दुख के मारे ४. निष्ठुर ५. सत्य का खयाल ६. सिरहाने ७. 'फ़ानी' की क़ब्र ८. शिकायत ९. ज्ञान का प्रकाश १०. ज्ञानी हृदय ११. दुख ताप १२. ठंडी आग १३. गोद

दिल की हर करवट में इक दुनिया बनी और मिट गई
हाय इन दो ख़ून की बूंदों में कितना जोश था
क्या ये 'फ़ानी' कर रहा था आलमे-हस्ती[1] की सैर
आगे-आगे बेख़ुदी[2] थी पीछे-पीछे होश था

◇ ◇ ◇

तेरा, निगाहे-शौक़[3] ! कोई राज़दां न था
आँखों को वरना जल्वाए-जानां कहां न था
अब तक तेरी गली में ये रुसवाइयां न थीं
अब तक तो इस ज़मीं पे कोई आसमां न था
मफ़हूमे-कायनात[4] तुम्हारे सिवा नहीं
तुम छुप गये नज़र से तो सारा जहाँ न था
हर शाख़, हर शजर[5] से न थी बिजलियों को लाग
हर शाख़, हर शजर पे मेरा आशियाँ न था
तूने करम[6] किया तो ब-उनवाने-रंगे-ज़ीस्त[7]
ग़म भी मुझे दिया तो ग़मे-जाविदां[8] न था
'फ़ानी' फ़सूने-मौत[9] की तासीर देखना
ठहरा वो दिल कि जिस पे सुकूं[10] का गुमाँ न था

◇ ◇ ◇

१. संसार २. आत्म-विस्मृति ३. प्रेम-दृष्टि ४. सृष्टि का उद्देश्य ५. पेड़ ६. कृपा ७. जीवन की भाँति ८. अनन्त दुख ९. मौत का जादू १०. शांति

ज़ीस्त[1] का हासिल[2] बनाया दिल जो गोया कुछ न था
ग़म ने दिल को दिल बनाया वरना क्या था कुछ न था
वह तो मेरे सामने थे, देखने की देर थी
मैंने आंखें बन्द करलीं वरना परदा कुछ न था
या अलम-कोशी[3] रही या ख़ुद-फ़रामोशी[4] रही
दिल किसी दिन दिल न था, या दर्द था, या कुछ न था
कुछ समझ कर ख़ुद ही हमने जान दे दी दिल के साथ
उनकी नज़रों का अभी ऐसा तक़ाज़ा कुछ न था
आपका दीवाना था, यह इद्दआ[5] बातिल[6] सही
'फ़ानी'-ए-दीवाना दीवाना भी था या कुछ न था

◇ ◇ ◇

ज़िन्दगी का कोई पहलू ही न था जो ग़म न था
होश का सौदा[7] जुनूने-आशिक़ी[8] से कम न था
यूँ न थे महरूमे-मर्गे-नागहां[9] बीमारे-इश्क़
वो भी दिन थे जब मिज़ाजे-ज़िन्दगी बरहम[10] न था
दिल की क़िस्मत ही बुरी थी, वरना कूए-दोस्त[11] में
था कोई ज़र्रा जो दिल के दर्द का महरम[12] न था ?
रस्मे-ख़ुद्दारी[13] से गो वाक़िफ़ न थी दुनियाए-इश्क़
फिर भी अपना ज़ख़्मे-दिल शरमिन्दाए-मरहम[14] न था

---

१. जीवन २. फल ३. रंज उठाना ४. आत्म-विस्मृति ५. दावा ६. झूठ ७. उन्माद ८. प्रेमोन्माद ९. अचानक मृत्यु से वंचित १०. बिखरा ११. प्रिय की गली १२. भेद जानने वाला १३. स्वाभिमान १४. मरहम का अहसानमंद

रफ़्तए-बीमे-ख़िज़ाँ[1] थी इस चमन की हर बहार
ख़न्दाए-गुल[2] था मगर बे-गिरियाए-शबनम[3] न था
दिल में 'फ़ानी' इक न इक हंगामा बरपा ही रहा
शौक़ था, जब तक किसी के शौक़ का मातम न था

◇ ◇ ◇

बिजलियां टूट पड़ीं जब वो मुक़ाबिल से उठा
मिल के पलटी थीं निगाहें कि धुग्रां दिल से उठा
जल्वा[4] महबूस[5] सही, ग्रांख को ग्राज़ाद तो कर
क़ैदे-ग्रादाबे-तमाशा[6] भी तो महफ़िल से उठा
ख़बरे - क़ाफ़िलए - गुमशुदा[7] किस से पूछूं
इक बगूला भी न ख़ाके-रहे-मंज़िल[8] से उठा
मौत हस्ती पे वो तोहमत थी कि ग्रासान न थी
ज़िन्दगी मुझ पे वो इल्ज़ाम कि मुश्किल से उठा
किस की कश्ती तहे-गर्दाबे-फ़ना[9] जा पहुंची
शोरे-लब्बैक[10] जो 'फ़ानी' लबे-साहिल[11] से उठा

◇ ◇ ◇

१. पतझड़ से डरी २. फूल की हँसी ३. ग्रोस का रोना ४. ज्योति ५. बंदी ६. देखने के नियम ७. खोये काफ़िले की खबर ८. मार्ग की धूल ९. भंवर के नीचे १०. 'मैं हाज़िर हूँ' का शोर ११. तट

सितमे - गर्दिशे - अय्याम[1] उठा
हर सहर[2] उठ के ग़मे-शाम[3] उठा
तुम जिसे दर से उठा देते थे
आज दुनिया से वो नाकाम[4] उठा
इश्क़ का एक क़सूर और सही
मौत के सर से तो इल्ज़ाम उठा
अब्र[5] उठा सिम्ते-हरम[6] से ज़ाहिद
तू भी सज्जादा[7] उलट, जाम[8] उठा
हिल गई फिर मेरे दिल की दुनिया
दर्द फिर लेके तेरा नाम उठा

◇ ◇ ◇

नाकाम[9] है तो क्या है, कुछ काम फिर भी कर जा
मर्दाना - वार जी और मर्दाना - वार मर जा
दुनिया के रंजो-राहत[10] कुछ हों तेरी बला से
दुनिया की हर अदा से मुंह फेरकर गुज़र जा
इस बहरे-बेकरां[11] में साहिल[12] की जुस्तजू क्या
कश्ती की आरज़ू क्या, डूब और पार कर जा

---

१. संसार-चक्र का अत्याचार २. सुबह ३. रात का रंज ४. असफल
५. बादल ६. काबे की ओर ७. नमाज़ का कपड़ा ८. प्याला
९. असफल १०. सुख-दुःख ११. असीम सागर १२. तट

कसरत[१] में देखता जा तकरारे - हुस्ने - वहदत[२]
मजबूरे-यक-नज़र[३] आ मुम्ताज़े-सद-नज़र[४] जा
यह मैकदा[५] है, पासे - आदाबे - मैकदा[६] कर
अव्वल ख़राब आ, और आख़िर ख़राब - तर जा
घबरा गया ख़िरद[७] की तारीकियों[८] से 'फ़ानी'
ऐ नूरे-इश्क़ ! दिल की गहराइयों में भर जा

◇ ◇ ◇

मिज़ाजे-दह्र[९] में उनका इशारा पाये जा
जो हो सके तो बहर-हाल मुस्कुराये जा
बहारे-सद-चमनिस्ताने-आरज़ू[१०] बनकर
मेरे ख़याल की रंगीनियों में आये जा
ख़िरद-नवाज़[११] निगाहों की आड़ में रहकर
फ़ज़ाए-आलमे-दीवानगी[१२] पे छाये जा
पिलाये जा, कि अभी होशे-बेख़ुदी[१३] है मुझे
पिलाये जा मुझे, साक़ी ! अभी पिलाये जा
दिलो-जिगर पे गुज़र जायेगी जो गुज़रेगी
तेरी नज़र से जो फ़ित्ने उठें उठाये जा
ज़रा ठहर, कि अब अंजामे-सोज़े-ग़म[१४] है क़रीब
चिराग़े-ज़ीस्त[१५] भड़कने को है, बुझाये जा

१. विभिन्नता २. एकता की पुनरोक्ति ३. एक दृष्टि तक सीमित ४. सौ दृष्टियों वाला ५. मदिरालय ६. मदिरालय के नियमों का पालन ७. बुद्धि ८. अंधकारों ९. संसार की रुचि १०. प्रेमोद्यान का बसंत ११. बुद्धि-प्रेमी १२. उन्माद-संसार के वातावरण १३. आत्म-विस्मृति का बोध १४. प्रेम-ताप का अन्त १५. जीवन-दीप

सक्ते-मय्यते-'फ़ानी'[१] है इक फ़सानाए-शौक़[२]
लबे-ख़मोश से हर मुद्दआ[३] को पाये जा

◇ ◇ ◇

ये किस क़यामत की बेकसी है न मैं ही अपना न यार मेरा
न खातिरे - बेक़रार मेरी न दीदाए - अश्कबार[४] मेरा
विसाल तेरा ख़याल तेरा जो हो तो क्योंकर न हो तो क्योंकर
न तुझ पे कुछ इख़्तियार मेरा न दिल पे कुछ इख़्तियार मेरा
मैं दर्दे-फ़ुरक़त[५] से जां-बलब[६] हूं, तुम्हें यक़ीने-वफ़ा नहीं है
मुझे नहीं एतबार अपना, तुम्हें नहीं एतबार मेरा
सुना है उट्ठा है इक बगूला जिलौ में[७] कुछ आंधियों को लेकर
तवाफ़े-दश्ते-जुनूं[८] को शायद गया है 'फ़ानी' ग़ुबार मेरा

◇ ◇ ◇

वो कहते हैं कि है टूटे हुए दिल पर करम मेरा
मगर मिनजुमलाए-आदाबे-ग़मख़्वारी[९] है ग़म मेरा
ज़हे-तक़दीरे-नाकामी[१०] कि तेरी मस्लहत[११] ठहरी
तेरी मर्ज़ी से वाबस्ता[१२] हुआ अल्लाह ग़म मेरा
न जानें इस सफ़र की मंज़िले-अव्वल कहां होगी
फ़ना की आख़िरी मंज़िल पे है पहला क़दम मेरा

१. 'फ़ानी' की लाश का मौन २. प्रेम की कहानी ३. उद्देश्य ४. रोती हुई आंख ५. विरह-पीड़ा ६. मरणासन्न ७. साथ में ८. उन्माद के जंगलों में घूमने ९. सहानुभूति का ढंग जानने वाला १०. वाह रे दुर्भाग्य ! ११. इच्छा १२. सम्बन्धित

मेरे जोशे-तलब[१] की शाने-इस्तग़ना[२] कोई देखे
कि मैं रहबर[३] से आगे, मुझसे आगे है क़दम मेरा
मैं वह आज़ुर्दाए-वह्मो-मसर्रत[४] हूं, मुआज़ल्ला[५] !
कि ग़म को ग़म समझने से भी घबराता है दम मेरा
अब आगे किससे लिक्खा जाये, आग़ाज़े-मुहब्बत[६] पर
फ़साना ख़त्म कर देते हैं अरबाबे-क़लम[७] मेरा
बक़ा[८] कहते हैं जिसको वह मेरा अहसान है 'फ़ानी'
वो हादिस[९] हूं कि दुनियाए-क़दिम[१०] भरती है दम मेरा

◇ ◇ ◇

नावके - नाज़[११] तेरा कोई ख़ता करता है
उड़ गया एक इशारे में निशाना दिल का
हसरतें, जिनके निकलने की नहीं कुछ उम्मीद
ढूंढती फिरती हैं सीने में ठिकाना दिल का
हाय, वह धुन तुझे मश्क़े-सितमे-बेजा[१२] की
हाय, वह रोज़ नये ज़ुल्म उठाना दिल का
हाय वह जोशे-जुनूं, हाय वो वहशत 'फ़ानी'
याद आता है हमें कोई ज़माना दिल का

◇ ◇ ◇

---

१. प्रेम २. निष्काम होना ३. पथ-प्रदर्शक ४. आशंका और सुख का सताया ५. भगवान बचाये ! ६. प्रेमारम्भ ७. लिखने वाले ८. अनश्वरता ९. नवीन १०. अनादि संसार ११. निगाह का तीर १२. अनुचित अत्याचार का अभ्यास

इक मुअम्मा[१] है समझने का न समझाने का
ज़िन्दगी काहे को है ख़्वाब है दीवाने का
ज़िन्दगी भी तो पशेमां[२] है यहां लाके मुझे
ढूँढती है कोई हीला मेरे मर जाने का
तुमने देखा है कभी घर को बदलते हुए रंग ?
आओ, देखो न तमाशा मेरे ग़मख़ाने का
अब इसे दार[३] पे ले जा के सुलादे, साक़ी !
यूं बहकना नहीं अच्छा तेरे दीवाने का
दिल से पहुंची तो हैं आंखों में लहू की बूंदें
सिलसिला शीशे[४] से मिलता तो है पैमाने का
हड्डियां हैं कई लिपटी हुई ज़ंजीरों में
लिये जाते हैं जनाज़ा तेरे दीवाने का
हर नफ़स[५] उम्र-ए-गुज़श्ता[६] की है मय्यत[७] 'फ़ानी'
ज़िन्दगी नाम है मर मर के जिये जाने का

◇ ◇ ◇

ख़ल्क़[८] कहती है जिसे दिल तेरे दीवाने का
एक गोशा है ये दुनिया इसी वीराने का
हुस्न है ज़ात[९] मेरी, इश्क़ सिफ़त[१०] है मेरी
हूं तो मैं शमअ़ मगर भेस है परवाने का

---

१. पहेली २. लज्जित ३. सूली ४. सुराही ५. सांस ६. बीता जीवन ७. लाश ८. संसार ९. व्यक्तित्व १०. गुण

काबे को दिल की ज़ियारत[1] के लिए जाता हूं
आस्ताना[2] है हरम[3] मेरे सनमख़ाने[4] का
वह्दते-हुस्न[5] के जल्वों की ये कसरत[6], ऐ इश्क़ !
दिल के हर ज़र्रे में आलम है परीख़ाने का
चश्मे-साक़ी असरे-मैं[7] से नहीं है गुलरंग
दिल मेरे ख़ून से लबरेज़ है पैमाने का
हमने छानी हैं बहुत दैरो-हरम की गलियां
कहीं पाया न ठिकाना तेरे दीवाने का
किसकी आंखें दमे-आख़िर मुझे याद आती हैं
दिल मुरक़्क़अ़[8] है छलकते हुए पैमाने का
कहते हैं क्या ही मज़े का है फ़साना 'फ़ानी'
आपकी जान से दूर आपके मर जाने का

◇ ◇ ◇

गुल में वो अब नहीं है जो आलम था ख़ार का
अल्लाह ! क्या हुआ वो ज़माना बहार का
हर ज़र्रा जल्वागाह है हर दिल है चश्मे-शौक़[9]
अल्लाह रे एहतमाम[10] तमाशाए - यार का
पाता हूं आज भी ख़लिशे - नोके - ख़ार[11] में
भूला नहीं हूं लुत्फ़े - तबस्सुम[12] बहार का

१. दर्शन २. चौखट ३. काबा ४. मंदिर ५. एक सौंदर्य ६. बाहुल्य ७. शराब का असर ८. चित्र ९. प्रेम-दृग १०. शान ११. कांटे की खटक १२. मुस्कान

तिनकों से खेलते ही रहे आशियां[1] में हम
आया भी और गया भी ज़माना बहार का
जो तेरी याद में न बसर हो वो हर नफ़स[2]
एक वाहमा[3] है ज़िन्दगीए - मुस्तआर[4] का
'फ़ानी' यक़ीने - वादाए - फ़र्दा[5] को क्या कहूं
अब ज़िन्दगी है नाम फ़क़त इन्तज़ार का

◇ ◇ ◇

जिगर-ख़राश हैं हाल उन तबाह-हालों का
जिन्हें मिटा के रहा हौसला ख़यालों का
किया सवाल तो आवाज़े-बाज़गश्त[6] आई
जवाब मुझसे तलब है मेरे सवालों का
जुनूने - शिकवाए - बेदाद[7] पर ख़ुदा की मार
असर के साथ गया एतबार नालों[8] का
किसी की ग़म की कहानी है ज़िन्दगी 'फ़ानी'
ज़माना एक फ़साना है मरने वालों का

◇ ◇ ◇

नाम बदनाम है नाहक़ शबे-तनहाई का[9]
वह भी इक रुख़ है तेरी अंजुमन-आराई का[10]

---

१. घोंसला २. सांस ३. वहम ४. दूसरे का दिया जीवन ५. कल मिलने का यक़ीन ६. गूँज ७. ज़ुल्म की शिकायत करने का उन्माद ८. रोदन ९. विरह रात्रि १०. सामने होना

आ चला है मुझे कुछ वादाए-फ़र्दा[1] का यक़ीं
दिल पे इल्ज़ाम न आजाये शिकेबाई[2] का
अब न कांटों ही से कुछ लाग न फूलों से लगाव
हमने देखा है तमाशा तेरी रअनाई[3] का
ख़ुद ही बेताबे - तजल्ली[4] है अज़ल[5] से कोई
देखने के लिए परदा है तमन्नाई[6] का
फिर उसी काफ़िरे-बे-मेह्र[7] के दर पर 'फ़ानी'
ले चला शौक़ मुझे नासिया - फ़रसाई[8] का

◇ ◇ ◇

जज़्बे - मुहब्बत[9] भी क्या शै[10] है उनका चाहा हो न सका
वो मेरे दिल से क्या छुपते आंखों से भी परदा हो न सका
इज़्ज़ते-रुसवाई[11] भी कहीं तदबीर से हासिल होती है
हैफ़[12] है उसकी क़िस्मत पर जो इश्क़ में रुसवा हो न सका
यासो-उमीद[13] से काम न निकला दिल की तमन्ना दिल में रही
तर्के-तमन्ना कर न सके, इज़हारे-तमन्ना[14] हो न सका
जिससे दिल में ज़ख़्म पड़े थे फिर वो नज़र मरहम न हुई
तुमने जिसे अच्छा न किया फिर तुमसे भी अच्छा हो न सका
जिसकी चमक ज़र्रों में नहीं वो मेहरे - आलमताब[15] नहीं
जो न समाया क़तरे[16] में वो दरिया दरिया हो न सका

१. कल मिलने का वादा २. सब्र ३. सौंदर्य ४. जल्वा दिखाने को लालायित ५. सृष्टि के आरम्भ ६. प्रेमी ७. निष्ठुर प्रियतम ८. माथा रगड़ना ९. प्रेम-भावना १०. चीज़ ११. अपमान की प्रतिष्ठा १२. अफ़सोस १३. आशा-निराशा १४. प्रेम-निवेदन १५. दीप्त सूर्य १६. बूंद

जान दमे-रुख़सत ही न दी तो 'फ़ानी' तुझसे क्या उम्मीद
हिज्र की पहली फ़ुर्सत ही में तुझसे इतना हो न सका

◇ ◇ ◇

तेरी तिरछी नज़र का तीर है, मुश्किल से निकलेगा
दिल उसके साथ निकलेगा अगर यह दिल से निकलेगा
शबे-ग़म में भी मेरी सख़्तजानी को न मौत आई
तेरा काम, ऐ अजल[१] ! अब ख़ंजरे-क़ातिल से निकलेगा
निगाहे - शौक़ ! मेरा मुद्दआ[२] तू उनको समझा दे
मेरे मुंह से तो हर्फ़े - आरज़ू[3] मुश्किल से निकलेगा
कहां तक कुछ न कहिए, अब तो नौबत जान तक पहुंची
तकल्लुफ़ बरतरफ़, ऐ ज़ब्त ! नाला[४] दिल से निकलेगा
तसव्वुर[५] क्या तेरा आया क़यामत आगई दिल में
कि अब हर वलवला[६] बाहर मज़ारे-दिल[७] से निकलेगा
न आयेंगे वो तब भी दम निकल ही जायेगा 'फ़ानी'
मगर मुश्किल से निकलेगा, बड़ी मुश्किल से निकलेगा

◇ ◇ ◇

जिसे तर्के-हसरत[८] का अरमान होगा
पशेमान सा वह पशेमान[९] होगा

१. मौत २. उद्देश्य ३. प्रेम-निवेदन ४. रोना ५. ख़याल
६. उमंग ७. दिल की क़ब्र ८. प्रेम के परित्याग ९. शर्मिन्दा

अदाए - तग़ाफ़ुल[1] के मारे हुओं पर
सितम भी करोगे तो अहसान होगा
जिसे लोग कहते हैं उश्शाक़[2] का दिल
वो तेरे ही मिलने का अरमान होगा
तेरे अहदे-आज़ाद[3] में, जोशे-वहशत !
गरेबान गोया गरेबान होगा
नहीं कुछ वफ़ाओं पे मौक़ूफ़[4], ज़ालिम !
मेरे बाद तू भी पशेमान होगा
बुरा तो नहीं ख़्वाह कुछ भी हो 'फ़ानी'
वो काफ़िर न होगा मुसलमान होगा

◇ ◇ ◇

बे अजल[5] काम न अपना किसी उनवां[6] निकला
दम तो निकला मगर आज़ुर्दाए - अहसां[7] निकला
आगई है तेरे बीमार के मुंह पर रौनक़
जान क्या जिस्म से निकली कोई अरमां निकला
चारागर[8], नासहे-मुश्फ़िक़[9] , दिले-बे-सब्रो-क़रार[10]
जो मिला इश्क़ में ग़मख़्वार वो नादां निकला

१. उपेक्षा २. प्रेमियों ३. आज़ादी का ज़माना ४. निर्भर ५. मौत ६. प्रकार ७. अहसान का मारा ८. चिकित्सक ९. शुभेच्छुक मित्र १०. बेचैन दिल

बिजलियां शाख़े-नशेमन[१] पे बिछी जाती हैं
क्या नशेमन से कोई सोख़्ता-सामां[२] निकला
हाय वो वादाए-फ़र्दा[3] का मदद वक़्ते-आख़ीर
हाय वो मतलबे-दुश्वार[४] कि आसां निकला
शौक़े-बेताब[५] का अंजाम तहय्युर[६] पाया
दिल समझते थे जिसे दीदाए-हैरां[७] निकला
उसने क्या सीनाए-सदचाक[८] से खींचा 'फ़ानी'
दिल, मैं कहता हूं, वो कहता है कि पैकां[९] निकला

◇ ◇ ◇

दिल क्या, ग़मे-दुनिया क्या, इस दर्दे-मुहब्बत ने
एक एक हक़ीक़त को अफ़साना बना डाला
हर फूल की नकहत[१०] में कैफ़ीयते-मै[११] भर कर
साक़ी ने गुलिस्तां को मैख़ाना बना डाला
वह शमअ़ है तू, जिसने इस आईनाख़ाने में
अपनी ही तजल्ली[१२] को परवाना बना डाला

◇ ◇ ◇

---

१. घोंसले की डाल २. बरबाद ३. कल मिलने का वादा
४. कठिन कार्य ५. बेचैन प्रेम ६. आत्म-विस्मृति ७. हैरान आंख
८. फटा सीना ९. तीर की नोक १०. खुशबू ११. शराब का नशा
१२. ज्योति

कमाले-होश[१] है यूँ बे-नियाज़े-होश[२] हो जाना
तेरे आग़ोश में बेगानाए-आग़ोश[३] हो जाना
हमें तेरी मुहब्बत में फ़क़त दो काम आते हैं
जो रोने से कभी फ़ुरसत हुई, ख़ामोश हो जाना
वही बर्क़े-तजल्ली कार-फ़रमा[४] अब भी है लेकिन
निगाहों को मयस्सर ही नहीं बेहोश हो जाना
ख़ुदा रक्खे शरारे-इश्क़[५] को वह शमअ-सोज़ां[६] हूं
जले जाना जिसे मुमकिन है या ख़ामोश हो जाना
बहार अपनी चमन अपना क़फ़स[७] की तीलियों तक है
मुबारक नकहते-गुल[८] को चमन-बर-दोश[९] हो जाना
ख़ुदा दुश्मन को भी यह ख़्वाबे-महरूमी[१०] न दिखलाए
इधर ईमाए-पुरसिश[११] और उधर ख़ामोश हो जाना
क़यामत है ये टुकड़ा दास्ताने-इश्क़ का, यानी
मेरे राहत-तलब दिल का अज़ीयत-कोश[१२] हो जाना
मुरक़्क़अ[१३] है किसी की हस्तिए-मौहूम[१४] का 'फ़ानी'
वो उनका देखते ही देखते रूपोश[१५] हो जाना

◇ ◇ ◇

१. होश की पराकाष्ठा २. होश से उदासीन ३. गोद से अलग ४. कार्यरत ५. प्रेम का स्फुल्लिग ६. जलती शमा ७. पिंजड़ा ८. फूल की सुगंध ९. बाग को लिये फिरना १०. वंचना का स्वप्न ११. हाल पूछने की कोशिश १२. दुख का प्रेमी १३. चित्र १४. निस्सार जीवन १५. अन्तर्धान

फ़ज़ाए-शौक़[1] का वह शोला-ज़ारे-नूर[2] हो जाना
वो इक-इक ज़र्राए-दुनिया-ए-दिल का तूर हो जाना
मुझी पर मुनहसर ठहरा मेरा महजूर[3] हो जाना
मेरी हस्ती है ख़ुद अपनी नज़र से दूर हो जाना
असीरे-बंदे-दिल[4] होकर ग़मे-दुनिया से फ़ारिग़ हूं
मेरी आज़ादियों का राज़ है मजबूर हो जाना

◇ ◇ ◇

मैं नदामत[5] जान कर ख़ुश हूं ये मंज़र देखना
वो मुझे तड़पा के तेरा फिर न मुड़कर देखना
ज़िक्रे-ख़ुर्शीदे-क़यामत सुनके, वाइज़ ! क्या कहूं
ख़ैर, इस तर-दामनी[6] को रोज़े-महशर[7] देखना
सांस के जो आख़री झटकों में टुकड़े हो गयीं
हाय इन नाशाद आहों का मुक़द्दर देखना
मेरे दिल को चैन आजाने की ज़ामिन मौत है
तुम किसी दिन नब्ज़े-दिल पर हाथ रखकर देखना
मुज़्दा[8] फ़स्ले-गुल[9] का लाये तो सही बादे-बहार
हर कड़ी ज़ंजीर की ज़िन्दां[10] से बाहर देखना

१. प्रेम-संसार २. दीप्त ज्वाला ३. विरही ४. दिल के हाथों क़ैद ५. शर्म ६. पाप ७. क़यामत के दिन ८. ख़ुशख़बरी ९. बहार १०. क़ैदख़ाना

तिश्ना-लब[१] भी था मैं साक़ी ! जान से बेज़ार भी
साग़र, और फिर ज़हर से लबरेज़ साग़र, देखना
सुबह तक 'फ़ानी' हर आवाज़े-शिकस्ते-दिल[२] के साथ
क्या क़यामत था वो तेरा जानिबे-दर देखना

◇ ◇ ◇

आशना रस्मे-जुनूं से नहीं सौदा[३] अपना
आलमे-होश का हर ज़र्रा है सहरा[४] अपना
हुस्न बेताबे-तजल्ली[५] है और आंखें महरूम
था मगर शौक़ ही इन्कारे-तक़ाज़ा[६] अपना
क्यों फ़लक ! यह कोई गर्दिश में है गर्दिश कि हनोज़
तुझ से बदला न गया रंगे-तमन्ना अपना
दिले-नाकाम तेरी याद से नौमेद[७] नहीं
गुल-बदामां[८] है अभी ख़ारे-तमन्ना अपना
जाके शायद पलट आता हूं कि मंज़िल के क़रीब
नज़र आता है मुझे नक़्शे - कफ़े - पा[९] अपना
दिले - बेताब को पैग़ामे - सुकूं है 'फ़ानी'
चश्मे-बद-दूर[१०], ग़मे - हौसला - अफ़ज़ा[११] अपना

◇ ◇ ◇

१. प्यासा २. दिल टूटने की आवाज़ ३. उन्माद ४. जंगल ५. ज्योति दिखाने को बेचैन ६. तकाजे का विरोधी ७. निराश ८. फूल लिये हुए ९. पद-चिह्न १०. नज़र न लगे ११. उत्साहवर्धक प्रेम

क्या छुपाते किसी से हाल अपना
जी ही जब हो गया निढाल अपना
हम हैं उसके ख़याल की तसवीर
जिसकी तसवीर है ख़याल अपना
वह भी अब ग़म को ग़म समझते हैं
दूर पहुंचा मगर मलाल अपना
तूने रख ली गुनाहगार की शर्म
काम आया न इनफ़आल[1] अपना
देख दिल की ज़मीं लरज़ती[2] है
यादे-जानां ! क़दम संभाल अपना
बाख़बर हैं वो सबकी हालत से
लाओ हम पूछ लें न हाल अपना
मौत भी तो न मिल सकी 'फ़ानी'
किससे पूरा हुआ सवाल अपना

◇ ◇ ◇

बेख़ुदी पे था 'फ़ानी' कुछ न इख़्तियार अपना
उम्र भर किया नाहक़ हमने इन्तज़ार अपना
ताबे-ज़ब्ते-ग़म[3] ने भी दे दिया जवाब आख़िर
उनके दिल से उठता है आज एतबार अपना
इश्क़ ज़िन्दगी ठहरा लेकिन अब ये मुश्किल है
ज़िन्दगी से होता है अहद[4] उस्तवार[5] अपना

---

१. शर्मिन्दगी २. कांपती ३. ज़ब्त की ताक़त ४. वादा
५ मज़बूत

ग़म ही जी का दुश्मन था ग़म से दूर रहते थे
ग़म ही रह गया आख़िर एक ग़म-गुसार अपना
ले गया चमन को भी मौसमे-बहार आकर
अब क़फ़स का गोशा है हासिले-बहार[१] अपना
झूठ ही सही वादा क्यों यक़ीं न कर लेते
बात दिलफ़रेब उनकी दिल उमीदवार अपना
दिल है मुज़्तरब[२] 'फ़ानी' आंख महवे-हैरत[३] है
दिल ने दे दिया शायद आंख को क़रार[४] अपना

◇ ◇ ◇

क्यों न सब पे हो जाता हाले-दिल अयाँ[५] अपना
हर सुकूते-बेजा[६] की तह में था बयां अपना
तेरे दर से उठकर हम जायें तो कहां जायें
अब ज़मीन अपनी है और न आसमां अपना
था हरीमे-नाज़[७] उनका दिल की आख़िरी मंज़िल
हमने उनको ढूँढा था मिल गया निशां अपना
बिजलियों से ग़ुरबत[८] में कुछ भरम तो बाक़ी है
जल गया मकां यानी था कोई मकां अपना
ज़िन्दगी कब अपनी है मौत किसके बस की है
हिज्र में बना लेते किस को मेहरबाँ अपना
उसने दिल की हालत का क्या असर लिया होगा
दिल ने क्या कहा होगा दिल है बेज़बाँ अपना

१. बहार का नतीजा २. बेचैन ३. आत्म-विस्मृत ४. चैन ५. प्रकट
६. अनुचित मौन ७. निवास ८. परदेश

नक़्शे-सजदा[1] , घबरा कर, क्यों मिटाये देते हो
इस में क्या नज़र आया संगे-आस्तां[2] अपना
घर है अब क़फ़स 'फ़ानी' घर कभी चमन भी था
हां कभी वतन भी था अब वतन कहां अपना

◇ ◇ ◇

दम हरीफ़े - ज़वाले - ग़म[3] न हुआ
मरते - मरते ये दर्द कम न हुआ
रह गई हसरते-वफ़ा बाक़ी
दिल को अंदाज़ा-ए-सितम न हुआ
दम भी फ़ानी किसी के ग़म तक है
दम न होगा अगर ये ग़म न हुआ

◇ ◇ ◇

जमाल[4] ख़ुद रुख़े - बे - परदा का नक़ाब हुआ
नयी अदा से नयी वज़अ़ का हिजाब हुआ
मिला अज़ल में[5] मुझे मेरी ज़िन्दगी के एवज़
वो एक लम्हाए-हस्ती कि सर्फ़े-ख़्वाब[6] हुआ

◇ ◇ ◇

वहशते-इश्क़[7] ने जब होश में लाना चाहा
अक़्ले-कज-फ़ह्म[8] ने दीवाना बनाना चाहा

---

१. माथा रगड़ने का निशान २. चौखट का पत्थर ३. प्रेम खत्म होने का साथी ४. सौंदर्य ५. आदि काल ६. निद्रा में व्यतीत ७. प्रेमोन्माद ८. मूर्ख बुद्धि

हम को मरना भी मयस्सर नहीं जीने के बग़ैर
मौत ने उम्रे-दोरोज़ा[1] का बहाना चाहा
फिर कुछ, ऐ बेख़बरी ! तुझ में कमी होती है
दर्द ने क्या मुझे फिर होश में लाना चाहा

◇ ◇ ◇

ले, एतबारे-वादाए-फ़र्दा[2] नहीं रहा
अब यह भी ज़िन्दगी का सहारा नहीं रहा
तुम मुझसे क्या फिरे कि क़यामत-सी आ गयी
यह क्या हुआ कि कोई किसी का नहीं रहा
क्या-क्या गिले[3] न थे कि इधर देखते नहीं
देखा तो कोई देखने वाला नहीं रहा
'फ़ानी' बस अब ख़ुदा के लिए ज़िक्रे-दिल न छेड़
जाने भी दे, बला से रहा या नहीं रहा

◇ ◇ ◇

ज़ब्त अपना शुआर[4] था, न रहा
दिल पे कुछ इख़्तियार था, न रहा
दिले-मरहूम[5] का ख़ुदा बख़्शे
एक ही ग़मगुसार था, न रहा
उनकी बेमेहरियों[6] को क्या मालूम
कोई उम्मीदवार था, न रहा

---

१. नश्वर जीवन २. कल के वादे का यक़ीन ३. शिकायतें
४. ढंग ५. मृत हृदय ६. निष्ठुरताओं

मौत का इन्तज़ार बाक़ी है
आप का इन्तज़ार था, न रहा
मेहरबाँ ! यह मज़ारे-'फ़ानी'[1] है
आप का जां-निसार था, न रहा

◇ ◇ ◇

ज़माने-रुख़सते-तिफ़ली[2] है, लो शबाब आया
सवा पहर रुख़े-रोशन[3] का आफ़ताब आया
बहुत दिनों यही कह-कह के दम दिये दिल को
ज़रा ठहर, दिले-मुज़्तर[4] ! कि अब जवाब आया
जिगर में दर्द ने उठ-उठ के चुटकियाँ ले लीं
ज़रा भी गर शबे-ग़म में ख़याले-ख़्वाब आया
कोई हो, शैख़ हो या बरहमन हो, ऐ 'फ़ानी'
गया जो मैकदाए-इश्क़[5] में ख़राब आया

◇ ◇ ◇

संगे-दर[6] देख के सर याद आया
कोई दीवाना मगर याद आया
हर तबस्सुम[7] पे ये खाता हूं फ़रेब
कि उन्हें दीदाए-तर[8] याद आया
फिर तेरा नक़्शे-क़दम है दरकार
सजदाए-राहगुज़र याद आया

१. 'फ़ानी' की क़ब्र २. बचपन जाने का समय ३. सुन्दर मुखड़ा ४. बेचैन दिल ५. प्रेम-मदिरालय ६. प्रिय के द्वार का पत्थर ७. मुस्कान ८. भीगी आँख

उसको भूले तो हुए हो 'फ़ानी'
क्या करोगे वो अगर याद आया

◇ ◇ ◇

दम क्या तने-बिस्मिल से आसान निकल आया
अरमान भरे दिल का अरमान निकल आया
तुम शामे-शबे-फ़ुरक़त[१] बेसाख़्ता आ निकले
या कुफ़्र के परदे से ईमान निकल आया
हम अरसाए-हस्ती[२] से गुज़रे भी तो क्या गुज़रे
इक और क़यामत का सामान निकल आया
आँखों की ख़ता 'फ़ानी' महशर[३] में अता[४] ठहरी
तूफ़ान उठाया था अहसान निकल आया

◇ ◇ ◇

जज़्बे-दिल[५] जब ब-रूए-कार[६] आया
हर नफ़स[७] से पयामे-यार आया
मौत का इन्तज़ार था, आई
जाइए अब मुझे क़रार आया
आज हम पी सके न वह आँसू
उनके आगे जो बार-बार आया
ख़ैर तो है कि आपके दर से
आज 'फ़ानी' उमीदवार आया

◇ ◇ ◇

---

१. विरह-रात्रि की शाम २. जीवन-क्षेत्र ३. क़यामत ४. कृपा
५. प्रेम-भावना ६. कार्यशील ७. साँस

वादे के ये तेवर हैं कह दूं कि यक़ीं आया
अब उनसे कोई क्योंकर कह दे कि नहीं आया
यह कूचाए-क़ातिल है, आबाद ही रहता है
इक ख़ाक-नशीं उट्ठा इक ख़ाक-नशीं[१] आया
दुनिया के गिले-शिकवे हम हश्र[२] में क्या करते
कहना तो बहुत चाहा कुछ याद नहीं आया
फिर गोरे-ग़रीबां[३] का हर ज़र्रा लरज़[४] उट्ठा
'फ़ानी' कोई दिल शायद फिर ज़ेरे-ज़मीं[५] आया

◇ ◇ ◇

बहते-बहते सारे आँसू बह गये
रोते-रोते आँसुओं को रो लिया
लो, तुम्हारे सर है मेरी मुंसिफ़ी
दिल मेरा तुमने लिया, बोलो लिया ?
आये दुनिया में तो साथ आई अजल[६]
हाय दुश्मन पीछे-पीछे हो लिया

◇ ◇ ◇

मुझ को मेरे नसीब ने रोज़े-अज़ल[७] न क्या दिया
दौलते-दोजहां न दी इक दिले-मुब्तला[८] दिया

१. फ़क़ीर २. क़यामत ३. ग़रीबों की क़ब्र ४. कांप ५. पृथ्वी के नीचे ६. मौत ७. आदि दिवस ८. प्रेमी हृदय

क़ब्र में जब किसी तरह दिल की तड़प न कम हुई
यादे-ख़रामे-नाज़[१] ने हश्र[२] का आसरा दिया
दिल में समा के फिर गयी आस बढ़ा के फिर गयी
आज निगाहे-दोस्त ने काबा बना के ढा दिया
यूं न किसी तरह कटी जब मेरी ज़िन्दगी की रात
छेड़ के दास्ताने-ग़म दिल ने मुझे सुला दिया
यास[३] ने दर्द ही नहीं, हक़ तो ये है, दवा भी दी
'फ़ानी'-ए-नाउमीद को मौत का आसरा दिया

◇ ◇ ◇

वो पूछते हैं हिज्र में है इज़्तराब[४] क्या
हैरान हूं कि दूं उन्हें इसका जवाब क्या
जाती नहीं ख़लिश अलमे-रोज़गार[५] की
ऐ आसमाँ ! हुआ वो तेरा इन्क़लाब क्या
बेश-अज़-गुमाने-ख़्वाब[६] नहीं फ़ुरसते-हयात[७]
'फ़ानी' तुम इस ख़याल को समझे हो ख़्वाब क्या

◇ ◇ ◇

जुस्तजूए - निशाते - मुबहम[८] क्या
दिल मयस्सर है लज़्ज़ते-ग़म क्या
एक आलम को देखता हूं मैं
यह तेरा ध्यान है मुजस्सम[९] क्या

१. प्रिय के चलने की याद २. क़यामत ३. निराशा ४. बेचैनी
५. संसार के दुख ६. स्वप्न के सन्देह से अधिक ७. जीवन-काल
८. संदिग्ध सुख की खोज ९. मूर्त

मिट गया नामे-आशिक़ी अब और
चाहता है वो हुस्ने-बरहम[१] क्या
दिल कमाले-हयात[२] है 'फ़ानी'
दिल के मारे हुओं का मातम क्या

◇ ◇ ◇

नज्रे-दर्दे - दिल[३] ग़मे - दुनिया किया
इक मिटाया दाग़ इक पैदा किया
बिजलियां भर दीं निगाहे-यार में
तूने आहे-आतशीं[४] यह क्या किया
नाला क्या, हां इक धुआं सा शामे-हिज्र
बिस्तरे - बीमार से उट्ठा किया
ज़ीस्त[५] थी बेकार 'फ़ानी' दिल के बाद
जान भी क़ुरबान की, अच्छा किया

◇ ◇ ◇

शौक़ से नाकामी की बदौलत कूचाए-दिल ही छूट गया
सारी उमीदें टूट गयीं दिल बैठ गया जी छूट गया
फ़स्ले-गुल[६] आयी या अजल[७] आयी क्यों दरे-ज़िंदां[८] खुलता है
क्या कोई क़ैदी और आ पहुंचा या कोई क़ैदी छूट गया
लीजिए क्या दामन की ख़बर और दस्ते-जुनूं[९] को क्या कहिए
अपने ही हाथ से दिल का दामन मुद्दत गुज़री छूट गया

१. कुपित सौंदर्य २. जीवन की पूर्णता ३. प्रेम की भेंट ४. जलती आह ५. जीवन ६. बहार ७. मौत ८. क़ैदखाने का दरवाज़ा ९. उन्माद का हाथ

मंज़िले-इश्क़ पे तनहा पहुंचे कोई तमन्ना साथ न थी
थक-थककर इस राह में आख़िर इक-इक साथी छूट गया
'फ़ानी' हम तो जीते जी वह मय्यत[१] हैं बे-गोरो-कफ़न[२]
ग़ुरबत[३] जिसको रास न आयी और वतन भी छूट गया

◇ ◇ ◇

वह जी गया जो इश्क़ में जी से गुज़र गया
ईसा को दो नवेद[४] कि बीमार मर गया
दुनिया में हाले-आमदो-रफ़्ते-बशर[५] न पूछ
बे-इख़्तियार आके रहा, बेख़बर गया
शायद कि शामे-हिज्र के मारे भी जी उठे
सुबहे-बहार हश्र[६] का चेहरा उतर गया
दिल का इलाज कीजिए अब या न कीजिए
अपना जो काम था वो ग़मे-यार कर गया
'फ़ानी' की ज़ात से ग़मे-हस्ती की थी नमूद[७]
शीराज़ा[८] आज दफ़्तरे-ग़म[९] का बिखर गया

◇ ◇ ◇

साया भी जिस पे मेरे नशेमन[१०] का पड़ गया
क्यों, आसमां ! वो बाग़ ही सारा उजड़ गया
तूने सब अपने काम बिगड़कर बना लिए
मेरी वफ़ा वो काम जो बनकर बिगड़ गया

१. लाश २. क़ब्र और कफ़न से रहित (लाश) ३. परदेश ४. खुशख़बरी ५. आदमी के आने-जाने का हाल ६. क़यामत ७. प्रकट होना ८. व्यवस्था ९. प्रेम-व्यापार १०. घोंसला

दिल की मुफ़ारिक़त[1] को कहां तक न रोइए
अल्लाह ! एक उम्र का साथी बिछड़ गया
होता है आज फ़ैसला उम्मीदो-यास का
मिटता है अब वो दिल जो बसा और उजड़ गया
बनती नहीं है सब्र को रुख़सत किये बग़ैर
काम उनकी बेक़रार निगाहों से पड़ गया
अल्ला रे जोशे-बादे-बहारी[2] तेरा असर !
पैमाना लड़खड़ा के सुराही से लड़ गया
इक हश्र और चाहिए इस रू-सियाह[3] को
'फ़ानी' ज़मीने-हश्र[4] में ग़ैरत से गड़ गया

◇ ◇ ◇

आंख उठायी ही थी कि खायी चोट
बच गयी आंख दिल पे आयी चोट
दर्दे-दिल की उन्हें ख़बर क्या हो
जानता कौन है परायी चोट
तेग़ थी हाथ में न खंजर था
उसने क्या जाने क्या लगायी चोट
कहीं छुपती भी है लगी दिल की
लाख 'फ़ानी' ने गो छुपायी चोट

◇ ◇ ◇

१. अलग होना २. बहार की हवा का जोश ३. पापी ४. क़यामत की ज़मीन

रुलाया उम्र भर ख़ूने-जिगर इक-इक मुसीबत पर
मिटाकर दम लिया, पत्थर पड़ें दर्दे-मुहब्बत पर

कहीं इबरत बरसती है कहीं हसरत बरसती है
ख़ुदा की हसरतें नाज़िल[1] हैं क्या-क्या दश्ते-वहशत[2] पर

जनाज़े पर तेरे कुश्ते[3] के, ज़ालिम ! कितना मजमा था
कि शौक़े-दीद में हसरत गिरी पड़ती थी हसरत पर

न चाहा हुस्न की फ़ितरत[4] ने कोई दाग़ दामन पर
रहा महशर में अपना ख़ूने-नाहक़ अपनी गर्दन पर

क़यामत की कशिश रखते हैं दाने मेरे ख़िरमन[5] के
कहीं की बिजलियां हों, आके छा जाती हैं ख़िरमन पर

मुहब्बत में हमें जी खोलकर रोना नहीं आता
जो चार आंसू हैं आंखों में तो दो आंसू हैं दामन पर

मुझे खींचे लिये जाता है क्या जाने कहां कोई
न कुछ अहसाने-रहबर[6] है न कुछ इल्ज़ाम रहज़न[7] पर

हँसी आती है तेरी सादगी-ए-शौक़ पर 'फ़ानी'
वो मय्यत[8] ही पे कब आये जो अब आयेंगे मदफ़न[9] पर

◇ ◇ ◇

---

१. उतरीं २. उन्माद का वन ३. शहीद ४. स्वभाव ५. खलिहान ६. पथ-प्रदर्शक का अहसान ७. डाकू ८. लाश ९. क़ब्र

वो ख़ुद अब फ़रेबे-जमाल[1] है जो नज़र थी जल्वाए-यार[2] पर
मुझे अब बहार से क्या ग़रज़ कि मेरी ख़िज़ां है बहार पर
मेरे ज़ौक़े-दीद[3] को बिजलियां जो नसीब हैं तो यही सही
ये गुनाह है तो उठा न रख ये गुनाह रोज़े-शुमार[4] पर
वो मज़ारे-'फ़ानी'-ए-मुब्तला का निशां मिटाने को आयेंगे
ये वईद[5] वादे से कम नहीं कि वो आयेंगे तो मज़ार पर

◇ ◇ ◇

कर न फ़रियाद, ख़मोशी में असर पैदा कर
दर्द बनकर दिले-बे-दर्द में घर पैदा कर
मैं दुआ मौत की मांगूं तो असर पैदा कर
वरना, यारब ! शबे-फ़ुरक़त की सहर[6] पैदा कर
तह में जा, सतह से तू क़तअ्-नज़र[7] करके देख
क़तरे-क़तरे में समन्दर है, नज़र पैदा कर
जितने ग़म चाहे दिये जा मुझे, यारब ! लेकिन
हर नये ग़म के लिए ताज़ा जिगर पैदा कर
या इसे कर किसी बिजली के हवाले, यारब !
या मेरे नख़्ले-तमन्ना[8] में समर[9] पैदा कर

◇ ◇ ◇

---

१. सौंदर्य का धोखा २. प्रिय का सौंदर्य ३. दर्शन की इच्छा ४. क़यामत ५. बुरा वादा ६. सुबह ७. नज़र हटाना ८. प्रेम का वृक्ष ९. फल

हिज्र में मुस्कुराये जा दिल में उसे तलाश कर
नाज़े-सितम उठाये जा राज़े-सितम न फ़ाश कर
शेवाए - आशिक़ी है यह हासिले - ज़िन्दगी है यह
आहे-जिगर-गुदाज़ खींच नालाए - दिल-ख़राश कर
दर्द दिया करम किया, अब इसे ला-दवा बना
शीशाए - दिल अता किया, अब इसे पाश-पाश[१] कर
'फ़ानी' अब इन्तहा हुई नज़अ़[२] में ज़ब्ते-इश्क़ क्यों
अब तो किसी का नाम ले, अब तो ये राज़ फ़ाश कर

◇ ◇ ◇

जी ढूंढता है घर कोई दोनों जहां से दूर
इस आपकी ज़मीं से अलग, आसमां से दूर
शायद मैं दरख़ुरे - निगहे - गर्म[३] भी नहीं
बिजली तड़प रही है मेरे आशियां से दूर
है मनअ़ राहे - इश्क़ में दैरो - हरम का होश
यानी कहां से पास है मंज़िल कहां से दूर
ता[४] अर्ज़े-शौक़ में न रहे बंदगी की लाग
इक सजदा चाहता हूं तेरे आस्तां[५] से दूर

◇ ◇ ◇

गुज़र गया इन्तज़ार हद से ये वादाए-नातमाम[६] कब तक
न मरने देगी मुझे, सितमगर ! तेरी तमन्नाए-ख़ाम[७] कब तक

१. टुकड़े-टुकड़े २. मरण क्षण ३. गर्म निगाह के लायक़
४. इसलिए कि ५. द्वार ६. अधूरा वादा ७. बेकार प्रेम

अजल[1] ! मेरा इतना काम कर दे कि काम मेरा तमाम करदे
रहे कोई ज़िन्दगी के हाथों जहां[2] में रुसवाए-आम[3] कब तक
वो आये या वादे पर न आये बला से क़िस्मत जो कुछ दिखाये
मगर हमें देखना तो यह है कि आज होती है शाम कब तक
ये बहसो-तकरार छोड़ दे, आ, ये ज़ोहद[4] का अहद[5] तोड़ दे, आ
रहेगी, ऐ मुद्दई - ए - हुरमत[6] ! शराब देनी हराम कब तक

◇ ◇ ◇

मंज़िले-इश्क़[7] है नमूदे-वजूद[8]
हम भी हैं तेरी बदगुमानी तक
मौत है एक वक़्फ़ाए-मौहूम[9]
ज़िन्दगानी से ज़िन्दगानी तक
मेहरबानी की आस रहने दे
कौन जीता है मेहरबानी तक
ज़िक्र जब छिड़ गया क़यामत का
बात पहुंची तेरी जवानी तक
नींद थी चश्मे-नाज़[10] में 'फ़ानी'
एक बेख्वाब[11] की कहानी तक

◇ ◇ ◇

---

१. मौत २. दुनिया ३. बदनाम ४. धर्म ५. प्रण ६. इज्ज़त के दुश्मन ७. प्रेम का अंत ८. अस्तित्व का प्रकट होना ९. संदिग्ध समय १०. प्रिय की आंख ११. जागने वाला प्रेमी

दिल और दिल में याद किसी ख़ुश-ख़राम की
सीने में हश्र लेके चले हैं जहां से हम
अब चारा-साज़ीए-दिले-बीमार[1] क्या करें
ऐ मर्गे-नागहां[2] ! तुझे लायें कहां से हम
अल्लाह रखे हमको सहारा है ज़ोफ़[3] का
बैठे तो फिर उठेंगे न उस आस्तां[4] से हम

◇ ◇ ◇

क्या कहें क्यों ख़ामोश हुए हैं सुनके तेरी फ़ुरक़त की ख़बर हम
नालाए-दिल के जितने थे अजज़ा[5] हो गये सारे दरहम-बरहम[6]
गो बैठे भी उट्ठे भी हम महफ़िले-दुश्मन में तेरी ख़ातिर
बैठ गये दिले-ज़ार की सूरत उट्ठे सूरते-दर्दे-जिगर हम
दोस्त तसल्ली देने आये लेके दवायें चारागर[7] आया
लीजिए आई ज़ख़्मे-जिगर पर और एक ताज़ा आफ़ते-मरहम
डूब ही जा, ऐ कश्तिए-हस्ती! कुछ तो हो आख़िर, वरना कहां तक
बहरे-तलातुम-ख़ेज़े-जहां[8] में यूं ही रहेंगे ज़ेरो-ज़बर[9] हम
घड़ियां अपने ग़म की हमने ग़ुंचों में चल-फिर के गुज़ारीं
आये थे 'फ़ानी' बाग़े-जहां में गोया मिस्ले-नसीमे-सहर[10] हम

◇ ◇ ◇

न इब्तदा की ख़बर है न इन्तहा मालूम
रहा ये वह्म कि हम हैं सो वह भी क्या मालूम

१. बीमार दिल का इलाज २. अकाल मृत्यु ३. कमज़ोरी
४. चौखट ५. टुकड़े ६. छिन्न-भिन्न ७. चिकित्सक ८. संसार-सागर
९. ऊब-डूब १०. प्रभात-समीर की तरह

दुआ तो ख़ैर, दुआ से उमीदे - ख़ैर भी है
ये मुद्दआ है तो अंजामे - मुद्दआ[1] मालूम[2]
दुआ न राज़े - रज़ा[3] फ़ाश, वह तो यह कहिए
मेरे नसीब में थी, वरना सईए - नामालूम[4]
मेरी वफ़ा के सिवा ग़ायते - जफ़ा[5] क्यों हो
तेरी जफ़ा के सिवा हासिले - वफ़ा[6] मालूम
तेरे ख़याल के असरार[7] बेख़ुदी में खुले
हमीं छुपा न सके वरना दिल को क्या मालूम
फ़रेबे - अम्न में कुछ मसलहत तो है वरना
सुकूने - कश्ती - व - उम्मीदे - नाख़ुदा[8] मालूम
ये ज़िन्दगी की है रूदादे - मुख़्तसर[9] 'फ़ानी'
वजूदे - दर्द[10] मुसल्लम[11] इलाज नामालूम

◇ ◇ ◇

मुझ पे रखते हैं हश्र में इल्ज़ाम
आ न जाये ज़बां पे तेरा नाम
ज़ब्त की कोशिशें भी जारी हैं
दर्द भी कर रहा है अपना काम
उसने देखा है शाम का मंज़र
जिसने देखी है बेकसों की शाम

१. कामना का परिणाम २. जाने क्या हो ३. ईशेच्छा का रहस्य ४. व्यर्थ प्रयास ५. प्रियतम के ज़ुल्म का लक्ष्य ६. प्रेम का फल ७. रहस्य ८. नाव का चैन और माँझी की आशा ९. संक्षिप्त कहानी १०. पीड़ा का अस्तित्व ११. स्पष्ट

किससे अब दर्द की दवा चाहूं
दर्द उठता है लेके तेरा नाम
अब क़यामत क़रीब है 'फ़ानी'
फ़ितनाए-इश्क़ हो चला है तमाम

◇ ◇ ◇

आके तमाशागाहे - जहां[१] में दादे - तमाशा क्या चाहूं
यां हर ज़र्रा कहता है "मैं ज़र्रा नहीं हूं, दुनियां हूं"
मह्व-तमाशा हूं मैं, यारब ! या मदहोशे - तमाशा हूं
उसने कब का फेर लिया मुंह अब किसका मुंह तकता हूं
शब अश्कों के तूफ़ाँ का वह जोशो-खरोश, अरे तौबा !
हर अश्क उमड़कर कहता था मैं दिल के लहू का दरिया हूं

◇ ◇ ◇

हर साँस के साथ जा रहा हूं
मैं तेरे क़रीब आ रहा हूं
यह दिल में कराहने लगा कौन
रो रो के किसे रुला रहा हूं
तनहाइए-शामे-ग़म[२] के डर से
कुछ उनसे जवाब पा रहा हूं
लज़्ज़त-कशे-आरज़ू[3] हूं 'फ़ानी'
दानिस्ता[४] फ़रेब खा रहा हूं

◇ ◇ ◇

---

१. संसार का क्रीड़ास्थल २. विरह रात्रि का एकांत ३. प्रेम का सुख लूटने वाला ४. जान-बूझकर

माना तेरी राह का निशां हूं
यह भी तो बता कि मैं कहां हूं
जो हाल है अर्ज़-हाल भी है
मैं आप ही अपनी दास्तां हूं
मुझसे न मिला सुराग़े-हस्ती
बैठी हुई गर्दे-कारवां हूं
जो छुप न सके, वो दाग़ है इश्क़
कुछ कह न सके, वो राज़दां हूं
है मेरी बक़ा[1] फ़ना में 'फ़ानी'
इस बाग़ में बर्क़े-आशियां[2] हूं

◇ ◇ ◇

मेरी आंखों से बहना चाहिए दिल का लहू बरसों
रही है उनको ख़ूने-आरज़ू की आरज़ू बरसों
जिये जाने की तोहमत किस से उठती, किस तरह उठती
तेरे ग़म ने बचायी ज़िन्दगी की आबरू बरसों
निगाहों ने दिलों में, दिल ने आंखों में तुझे ढूंढा
तेरी धुन में रहे सौदाइयाने-जुस्तजू[3] बरसों
तेरी ईज़ा-पसंदी[4] की अदा भी क्या क़यामत है
मुझे मरने न देगी, आरज़ूए-मर्ग[5]! तू बरसों

१. अमर जीवन २. घोंसले की बिजली ३. खोज के उन्मत्त ४. कष्ट देने का प्रेम ५. मरणेच्छा

हमारी बेकसी की मौत बदला थी असीरी[१] का
रहा तौक़े - असीरी भी गिरफ़्तारे - गुलू[२] बरसों
किये जायेंगे दिल के ख़ात्मे पर शुक्र के सजदे
वफ़ाओं ने किया है खूने-हसरत से वज़ू बरसों
तुझे और हाले-दिल से यह तग़ाफ़ुल ! तौबा कर, तौबा
कि तुझसे मेरी ख़ामोशी ने की है गुफ़्तगू बरसों
मेरी इक उम्र 'फ़ानी' नज़अ[३] के आलम में गुज़री है
मुहब्बत ने मेरी रग-रग से खींचा है लहू बरसों

◇ ◇ ◇

उनके आगे जब ये आंखें डबडबा कर रह गयीं
वह हया-परवर निगाहें मुस्कुरा कर रह गयीं
कुछ जफ़ाओं की तलाफ़ी[४] कुछ वफ़ाओं का सिला[५]
वो अदाएं सब्र ही सब्र आज़मा कर रह गयीं
आसमां सर पर उठा लेने की हिम्मत अब कहां
लब तक आयीं भी अगर आहें तो आकर रह गयीं
अब मेरी बरबादियों को हश्र का है इन्तज़ार
जिस क़दर फ़ित्ने मयस्सर थे, उठा कर रह गयीं

◇ ◇ ◇

क्या अब से मौत को भी हम ज़िन्दगी बना लें
क्योंकर तेरी ख़ुशी को अपनी ख़ुशी बना लें

१. क़ैद होना २. गले का क़ैदी ३. मरणासन्नता ४. बदला
५. इनाम

फ़रज़ानगी[1] तो अपना मक़दूर[2] ही नहीं है
कहिए तो अक़्ल ही को दीवानगी बना लें
जिनको ख़याल पर भी क़ाबू न हो वो 'फ़ानी'
तक़दीर क्या बनाते, तदबीर ही बना लें

◇ ◇ ◇

आप से शरहे-आरज़ू[3] तो करें
आप तकलीफ़े-गुफ़्तगू तो करें
वह यहीं है जो वह कहीं भी नहीं
आइए, दिल में जुस्तजू तो करें
अहले-दुनिया मुझे समझ लेंगे
दिल किसी दिन ज़रा लहू तो करें
रंगो-बू क्या है, यह तो समझा दो
सैरे-दुनियाए-रंगो-बू तो करें
वह उधर, रुख़ इधर है मय्यत[4] का
लोग 'फ़ानी' को क़िब्ला-रू[5] तो करें

◇ ◇ ◇

ख़ुद मसीहा[6] ख़ुद ही क़ातिल हैं तो वो भी क्या करें
ज़ख़्मे-दिल पैदा करें या ज़ख़्मे-दिल अच्छा करें
जिस्मे-आज़ादी में फूंकी तूने मजबूरी की रूह
ख़ैर, जो चाहा किया, अब यह बता, हम क्या करें

१. बुद्धि २. भाग्य में ३. कामना की व्याख्या ४. लाश ५. क़ाबे की ओर ६. जिलाने वाला

ख़ून के छींटों से कुछ फूलों के ख़ाके ही सही
मौसमे-गुल आ गया, ज़िन्दां[1] में बैठे क्या करें
शौक़े-नज़्ज़ारा सलामत है तो देखा जायगा
उनको परदा ही अगर मंज़ूर है परदा करें
मर्गे-बेहंगाम[2] 'फ़ानी' वजहे-तसकीं[3] हो चुकी
ज़िन्दगी से आप घबराते हैं, घबराया करें

◇ ◇ ◇

क्यों दिल को सर्फ़े-कशमकशे-जुस्तजू[4] करें
लाओ, इसे शहीदे - ग़मे - आरज़ू[5] करें
थोड़ी-सी देर गिरियाए-ख़ूनीं[6] में और है
बढ़ ले कुछ और दर्द तो दिल को लहू करें
फ़ुरक़त में मौत मांगने वालों का क्या क़सूर
आख़िर ये नामुराद कोई आरज़ू करें?
'फ़ानी' अब उठ, कि मस्त हैं झोंके नसीम के
चलकर चमन में शग़्ले-मए-बेसबू[7] करें

◇ ◇ ◇

कैसी बहार ? अब वो ख़िज़ां के भी दिन गये
अब हम कहीं हैं, दाम[8] कहीं, आशियां कहीं
यूं हम निशाने-दोस्त बने भी तो क्या बने
मिलता नहीं किसी को हमारा निशां कहीं

१. क़ैद २. अकाल मृत्यु ३. शांति का कारण ४. खोज में रत
५. कामना का शहीद ६. ख़ून रोना ७. बग़ैर प्याले के पीना ८. जाल

ग़म रह गया है अ़हदे-मुहब्बत[1] की यादगार
यह भी न हो नसीबे-दिले-दुश्मनां[2] कहीं

◇ ◇ ◇

कांटों में भी फूलों की अदा थी मेरे आगे
अब बाग़ में जो फूल है कांटा है जिगर में
इस आलमे-तस्वीर को देखा तो ये देखा
मेरी ही नज़र मह्व है मेरी ही नज़र में
तुम थे तो मेरी शाम में था सुबह का आलम
तुम जब से गये शाम झलकती है सहर[3] में
हर अश्क तेरी याद के जल्वे से है मामूर[4]
दुनिया सिमट आयी है मेरे दीदाए-तर[5] में
'फ़ानी' है मेरी आहो-फ़ुग़ां में असर उलटा
शायद मेरी तक़दीर की गर्दिश है असर में

◇ ◇ ◇

हर नक़्शे-पा[6] को देख के धुनता हूं सर को मैं
पहचानता नहीं हूं तेरी रहगुज़र को मैं
गुम-कर्दा-राह[7] हूं क़दमे-अव्वलीं[8] के बाद
फिर राहबर[9] मुझे, न मिला राहबर को मैं
बहला न दिल न तीरगीए-शामे-ग़म[10] गई
यह जानता तो आग लगाता न घर को मैं

---

१. प्रेम-काल २. प्रतिद्वंद्वियों के भाग्य में ३. सुबह ४. भरी
५. भीगी आंख ६. पद-चिह्न ७. राह भूला हुआ ८. पहला क़दम
९. पथ-प्रदर्शक १०. विरह-रात्रि की अंधियारी

दो-तीन हिचकियों में दमे-नज़्अ[1] कह गया
शरहे-दराज़े - ज़िन्दगीए - मुख़्तसर[2] को मैं
'फ़ानी' दुआए-मर्ग की फ़ुरसत नहीं मुझे
यानी अभी तो ढूंढ रहा हूं असर को मैं

◇ ◇ ◇

बताया रास्ता इश्क़े-मजाज़ी[3] ने हक़ीक़ी का
ख़ुदा की शान, रहज़न[4] भी कभी रहबर[5] निकलते हैं
मेरी आँखों से है ज़ख़्मे-जिगर को रब्ते-पिनहानी[6]
तेरे पैकां[7] के रेज़े अश्क में अक्सर निकलते हैं
मुबारक 'फ़ानी'-ए-बिस्मिल कि तेरे ज़िबह करने को
नई छुरियाँ निकलती हैं नये ख़ंजर निकलते हैं

◇ ◇ ◇

यह धुन है तेरी या ध्यान है तेरा जाने इसे क्या कहते हैं
अब होशो-हवास भी आठ पहर कुछ खोये हुए से रहते हैं
अच्छा है अगर दो आग के दरिया आंसू बनकर बहते हैं
आँखों में तो रहकर ये फ़ित्ने तूफ़ान उठाये रहते हैं
तू और कहीं, हम और कहीं, मुमकिन जो न था वह मुमकिन है
जब सुनते थे तो डरते थे, अब पड़ती है तो सहते हैं

◇ ◇ ◇

---

१. मरण क्षण में २. क्षणिक जीवन की लम्बी व्याख्या ३. भौतिक प्रेम ४. डाकू ५. पथ-प्रदर्शक ६. गुप्त सम्बंध ७. तीर की नोक

दिल की हर लरज़िशे-मुज़्तर[1] पे नज़र रखते हैं
वो मेरी बेख़बरी की भी ख़बर रखते हैं
जिस तरफ़ देख लिया फूंक दिया तूरे-मजाज़[2]
ये तेरे देखने वाले वो नज़र रखते हैं
बेबसी देख, ये सौ बार किया अ़हद[3] कि अब
तुझ से उम्मीद न रक्खेंगे, मगर रखते हैं
कोई इस जब्रे-तमन्ना[4] की भी हद है 'फ़ानी'
हम शबे-हिज्र में उम्मीदे - सहर[5] रखते हैं

◇ ◇ ◇

नहीं कि दिल की रविश में कुछ इन्क़लाब नहीं
अब इज़्तराब की सूरत में इज़्तराब[6] नहीं
नज़र वही है जो महरूमे-सद-तमाशा[7] हो
वो दिल है जाने-तमन्ना जो कामयाब नहीं
निगाहे-शौक़ की रानाइयों[8] का क्या कहना
मगर ख़ुदा की क़सम आप का जवाब नहीं
मुझे ये दावते-रोज़े-हिसाब[9] क्यों, यारब !
मेरे गुनाह तो शर्मिन्दाए - हिसाब नहीं
ब-जाने-'फ़ानी'-ए-मरहूम अब वो बात कहां
तेरी गली में जो वह ख़ानुमां-ख़राब नहीं

◇ ◇ ◇

१. बेचैनी का कंपन २. भौतिकता-रूपी तूर-पर्वत ३. प्रण ४. प्रेम की विवशता ५. सुबह होने की आशा ६. बेचैनी ७. विचित्रता देखने से वंचित ८. सौंदर्य ९. क़यामत की दावत

लुत्फ़ो-करम के पुतले हो अब क़हरो-सितम का नाम नहीं
दिल पे ख़ुदा की मार कि फिर भी चैन नहीं आराम नहीं
जल्वाओ-दिल में फ़र्क़ नहीं जल्वे[1] ही को अब दिल कहते हैं
यानी इश्क़ की हस्ती का आग़ाज़[2] तो है अंजाम नहीं
रुक के जो सांसें आई गईं माना कि वो आहें थीं लेकिन
आपने तेवर क्यों बदले आहों में किसी का नाम नहीं
इश्क़ के आज़ारी[3] भी कहीं मर जाने से जी जाते हैं
ले ये तसल्ली रहने दे, ऐ मौत ! ये तेरा काम नहीं
दिल ही पे अपना बस नहीं चलता उनकी शिकायत क्या कीजे
आप हम अपने दुश्मन ठहरे दोस्त पे कुछ इल्ज़ाम नहीं
नज़अ[4] में 'फ़ानी' तूने ये किस का चुपके-चुपके नाम लिया
क्यों ओ काफ़िर ! तेरी ज़बां पर अब भी ख़ुदा का नाम नहीं

◇ ◇ ◇

दिल वक़्फ़े-तपिश[5] है हाय मगर वजहे-तपिशे-दिल कोई नहीं
बिस्मिल हूं मगर क्यों बिस्मिल हूं, फ़रियाद, कि क़ातिल कोई नहीं
किस ज़ोम में है ऐ रहरवे-ग़म[6] ! धोके में न आना मंज़िल के
यह राह बहुत कुछ छानी है इस राह में मंज़िल कोई नहीं
बस उन पे न उनकी याद पे है तक़दीर के क्या-क्या पहलू हैं
तदबीर से हासिल कुछ भी नहीं, तदबीर से ग़ाफ़िल कोई नहीं

१. ज्योति २. आरंभ ३. रोगी ४. मरण क्षण ५. बेचैन
६. प्रेम-पंथी

ख़ुद हुस्न कमाले-हुस्न है, यानी हुस्न जहां है कामिल[१] है
श्रौर इश्क़ मश्राले-इश्क़[२] है, यानी इश्क़ में कामिल कोई नहीं
हस्ती ही नहीं जो बातिल[३] हो फिर फ़र्क़े-मजाज़ो-हक़ीक़त[४] क्या
ये मजाज़े-हक़ीक़त[५] भी है हक़ीक़त[६], हस्तिए-बातिल[७] कोई नहीं
'फ़ानी' ही वो इक दीवाना था जो मौत के पहले मर जाये
क्या होश की काफ़िर दुनिया में इस मौत के क़ाबिल कोई नहीं

◇ ◇ ◇

दुनिया से, कुछ न पूछो, क्यों सरगरानियां[८] हैं
यारों से हमदमों[९] से क्यों बदगुमानियां हैं
इस बाग़ में हैं सारे मुरझाने वाले पौदे
शादी-श्रो-ग़म[१०] के झगड़े झूठी कहानियां हैं
है उम्रे-चन्द-रोज़ा[११] पानी का बुलबुला सा
श्रालम है ख़्वाब का-सा या नौजवानियां हैं
यां हमने जिसको देखा श्रपनी ग़रज़ का पाया
यह दाग़ दोस्तों की दिल पर निशानियां हैं
क्या कीजिए शिकायत है दह्र[१२] जाए-इबरत[१३]
जीते हैं श्रौर जब तक यह सख़्त-जानियां हैं

◇ ◇ ◇

---

१. पूर्ण २. प्रेम का फल ३. झूठी ४. भौतिक श्रौर श्राध्यात्मिक का श्रंतर ५. भौतिकता ६. श्राध्यात्मिक ७. झूठा जीवन ८. नाराज़गी ६. मित्रों १०. सुख-दुख ११. नश्वर जीवन १२. संसार १३. सीख लेने की जगह

मेरे लब पर कोई दुआ ही नहीं
इस करम[१] की कुछ इन्तहा ही नहीं
मेरी हस्ती गवाह है कि मुझे
तू किसी वक़्त भूलता ही नहीं
अब उसे नाउमीद क्यों कहिए
दिल को तौफ़ीक़े-मुद्दआ[२] ही नहीं
वही तू है वही तेरी महफ़िल
एक 'फ़ानी'-ए-मुब्तला[३] ही नहीं

◇ ◇ ◇

एक वही मुख़्तार[४] हैं, हम तो कहने को मजबूर नहीं
उनकी रज़ा[५] के बन्दों में आज़ादी का दस्तूर नहीं
किसने सुनाया हाल हमारा आज जो यह इर्शाद हुआ
दर्दे-मुहब्बत वालों को, सुनते हैं, शिफ़ा[६] मंज़ूर नहीं
ग़म को सबात[७] भी आख़िर कबतक और ये हयात भी आख़िर कब तक
हम भी न होंगे ग़म भी न होगा वह दिन भी कुछ दूर नहीं
जिनमें तुम्हारा नूर रहा था उनमें अंधेरा रहता है
जब से गये हो, आंखों में आंसू तो बहुत हैं नूर नहीं
यह तो बुरे आसार हैं 'फ़ानी', ग़म हो ख़ुशी हो, कुछ तो हो
दिल का यह क्या हाल हुआ मग़मूम[८] नहीं मसरूर नहीं

◇ ◇ ◇

१. कृपा २. इच्छा की क्षमता ३. प्रेमी 'फ़ानी' ४. मालिक, शक्तिवान ५. इच्छा ६. इलाज ७. स्थिरता ८. रंजीदा

ऐ बेख़ुदी ! ठहर, कि बहुत दिन गुज़र गये
मुझको ख़याले-यार कहीं ढूंढता न हो

◇ ◇ ◇

असर पाबन्दे-बेताबी[1] नहीं तो ज़ब्त ही क्यों हो
बला से हाले-दिल कुछ भी सही, नागुफ़्तनी[2] क्यों हो
ख़ुदा रक्खे मुहब्बत को न जीते हैं न मरते हैं
अजल[3] कहते हैं जिसको वह हमारी ज़िन्दगी क्यों हो
निगाहे-यास[4] को रूदादे-हसरत[5] कह तो लेने दे
तेरे दिल को लगे, ज़ालिम ! वही दिल की लगी क्यों हो
किसी की याद भी लिपटी हुई है दामने-दिल से
मेरी मय्यत[6] पे 'फ़ानी' नौहागर इक बेकसी क्यों हो

◇ ◇ ◇

मआले-सोज़े-ग़महाए-निहानी[7] देखते जाओ
भड़क उट्ठी है शमअ़ए-ज़िन्दगानी देखते जाओ
अभी क्या है, किसी दिन ख़ूं रुलायेगी ये ख़ामोशी
ज़बाने - हाल[8] की जादू - बयानी देखते जाओ
बहारे - ज़िन्दगी का लुत्फ़ देखा और देखोगे
किसी का ऐशे - मर्गे - नागहानी[9] देखते जाओ
सुने जाते न थे तुम से मेरे दिन-रात के शिकवे
कफ़न सरकाओ, मेरी बेज़बानी देखते जाओ

१. बेचैनी का पाबंद २. न कहने योग्य ३. मौत ४. निराश दृष्टि ५. दुःख गाथा ६. लाश ७. छुपे प्रेम का फल ८. मूक दशा ९. अकाल मृत्यु का सुख

वो उट्ठा शोरे-मातम आख़िरी दीदारे-मय्यत[1] पर
अब उट्ठा चाहती है लाशे-'फ़ानी' देखते जाओ

◇ ◇ ◇

बहार आई कि यारब ! ईद आई अहले-ज़िन्दां[2] को
गरेबां ने गले लिपटा लिया है बढ़के दामां को
न आया मौसमे-गुल जब दिले-दीवाना जीता था
जो अब आये तो, यारब ! आग लग जाये गुलिस्तां को
ख़ुदा ग़ारत करे दिल को बड़ी मुश्किल में डाला है
न समझा उम्र भर नादां फ़रेबे-इश्क़े-आसां[3] को
दिले-'फ़ानी' से गो निकली मगर आसां नहीं निकली
अजब शै थी, ख़ुदा बख़्शे, उमीदे-वस्ले-जानां[4] को

◇ ◇ ◇

ख़ुद होश से पैदा कर हर लग़्ज़िशे-मस्ताना[5]
तर्के-मै-ओ-मीना[6] कर, ऐ जुर्रते-रिन्दाना[7] !
दिल मअ़नी-ए-सूरत[8] है और सूरते-मअ़नी[9] भी
फ़रज़ाने[10] का फ़रज़ाना दीवाने का दीवाना
हैरत ने मुझे तेरा आईना बनाया है
अब तू मुझे देखा कर, ऐ जल्वाए-जानाना[11]

---

१. लाश देखना २. क़ैदियों ३. सरल प्रेम का धोखा ४. प्रिय मिलन ५. लड़खड़ाहट ६. मद्य त्याग ७. मद्यपान का साहस ८. रूप का अर्थ ९. अर्थ का रूप १०. बुद्धिमान ११. प्रिय का सौंदर्य

फ़ानी[1] ही नहीं 'फ़ानी' मैं दरसे-फ़ना[2] भी हूं
अफ़सानाए - इबरत[3] हूं और इबरते-अफ़साना

◇ ◇ ◇

इश्क़ ने दिल में जगह की तो क़ज़ा भी आयी
दर्द दुनिया में जब आया तो दवा भी आयी
हां न था बाबे-असर[4] बंद, मगर क्या कहिए
आह पहुंची थी कि दुश्मन की दुआ भी आयी
आप सोचा ही किये उससे मिलूं या न मिलूं
मौत मुश्ताक़[5] को मिट्टी में मिला भी आयी
देख यह जादाए-हस्ती[6] है, संभल कर 'फ़ानी'
पीछे - पीछे वो दबे पांव क़ज़ा भी आयी

◇ ◇ ◇

'फ़ानी' कफ़े-क़ातिल[7] में शमशीर नज़र आयी
ले ख़्वाबे-मुहब्बत की ताबीर[8] नज़र आयी
फिर अब्र[9] में वहशत[10] की तसवीर नज़र आयी
लहरायी हुई बिजली ज़ंजीर नज़र आयी
जब मैंने दुआओं का रुख़ सूए-फ़लक[11] देखा
तदबीर के पहलू में तक़दीर नज़र आयी

१. नाशवान २. नाश का पाठ ३. सीख की कहानी ४. असर का दरवाज़ा ५. प्रेमी ६. जीवन-पथ ७. क़ातिल का हाथ ८. स्वप्न-फल ९. बादल १०. उन्माद ११. आकाश की ओर

हर ऐश की महफ़िल में परवाने का मातम था
जो शमा नज़र आयी दिलगीर नज़र आयी
काबे में कलीसा[१] में हमने तो जहां देखा
ऐ क़स्रे - वफ़ा[२] ! तेरी तामीर नज़र आयी
दुनिया की बलाओं को जब जमअ् किया मैंने
धुंधली सी मुझे दिल की तसवीर नज़र आयी
दिल उनके न आने तक लबरेज़े-शिकायत था
वह आये तो अपनी ही तक़सीर नज़र आयी
'फ़ानी' ग़मे-हस्ती ने ज़िन्दा ही मुझे समझा
जब तक मेरे मरने में ताख़ीर[३] नज़र आयी

◇ ◇ ◇

सज़ा तजवीज़ की तूने जो मर्गे-नागहां[४] मेरी
मुहब्बत भी कोई तक़सीर थी, ऐ आसमां ! मेरी
ये उन पर मरने वालों में वो सदक़े होने वालों में
दिलो-जां दोनों उनके हैं न दिल मेरा न जां मेरी
शबे-ग़म कट गयी 'फ़ानी' सहर[५] वो होती आती है
क़ज़ा अल्लाह जाने रह गयी ज़ालिम कहां मेरी

◇ ◇ ◇

मजबूरी-ए-उरियां[६] को यह खिलअ़ते-मुख़्तारी[७]
अल्ला रे करम, हम और तौफ़ीक़े-गुनहगारी[८] !

१. गिर्जा २. प्रेम का महल ३. देर ४. अचानक मृत्यु ५. सुबह
६. खुली विवशता ७. अधिकार का जामा ८. पाप की क्षमता

'फ़ानी' मेरे मसलक[१] में ममनूअ[२] है हुशियारी
अहसासे - ख़ताकारी[३] है राज़े - ख़ताकारी[४]
उम्मीद के दम से है उम्मीद के दम तक है
अरबाबे - तमन्ना[५] पर अहसाने-दिल-आज़ारी[६]
आसान हुई मंज़िल आसार मुबारक हों
अब पांव नहीं उठते, अब राह हुई भारी
ख़ुश हूं कि तेरे ग़म में मरता हूं न जीता हूं
जीना है हवस-कोशी[७] मरना है रियाकारी[८]
सरकारे - मुहब्बत से पैग़ामे - सुकूं आया
गुज़री हदे-शोरिश[९] से जब शोरिशे--बेदारी[१०]
'फ़ानी' मेरी वहशत ने फिर शक्ल बदल डाली
फिर बख़ियाए-दामन[११] में मसरूफ़ है बेकारी

◇ ◇ ◇

इक बर्क़[१२] सरे-तूर[१३] है लहरायी हुई सी
देखूं तेरे होठों पे हंसी आयी हुई सी
इक आलमे-दिल है यही दुनिया यही फ़िरदौस[१४]
हर शै नज़र आती है नज़र आयी हुई सी
मेरे दिले - बरबाद के धुंधले से निशां हैं
इस बाग़ में कलियां हैं जो मुरझायी हुई सी

१. धर्म २. मना ३. पाप की अनुभूति ४. पाप का रहस्य
५. प्रेमियों ६. ज़ुल्म का अहसान ७. वासना ८. धोखेबाज़ी
९. हलचल की हद १०. जागने की हलचल ११. दामन सीना
१२. बिजली १३. तूर पर १४. स्वर्ग

हर सांस है 'फ़ानी' मुझे गोया दमे-आख़िर
समझा हूं मुहब्बत में क़ज़ा आयी हुई सी

◇ ◇ ◇

लहद[1] में चैन से रहने न देगी याद इस ग़म की
बिछाओ तुम न बज़्मे-नाज़ में सफ़[2] मेरे मातम की
जो आये हो तो ठहरो, दम निकलता देखते जाओ
मेरी जां मेहमाने-लब है और वह भी कोई दम की
बनाऊं दिल को ख़ूगर[3], हाय क्योंकर रंजे-बेहद का
भुला दूं दिल से क्योंकर याद तेरे लुत्फ़े-पैहम[4] की
दिले-मरहूमे-'फ़ानी' की जवांमर्गी का[5] मातम है
चली आती हैं उमडी आरज़ूएं एक आलम की

◇ ◇ ◇

हम अपने जी से गुज़रे, यूं सहर[6] की
शबे-ग़म बढ़ चली थी, मुख़्तसर की
कशिश कैसी, कहां का जज़्बाए-दिल
वो आये हैं, बन आई है असर की
तुम्हारे इश्क़ का अल्लाह रे फ़ैज़ !
जिगर में धूम है दर्दे-जिगर की
निगाहे-शौक़ के दम तक थीं आंखें
अब आंखें यादगारें हैं नज़र की

१. क़ब्र २. पंक्ति ३. अभ्यस्त ४. निरंतर कृपा ५. जवानी की मौत का ६. सुबह

शबे-फ़ुरक़त कटी या उम्र, 'फ़ानी'
अजल के साथ आमद है सहर की

◇ ◇ ◇

दैर[1] में या हरम[2] में गुज़रेगी
उम्र तेरे ही ग़म में गुज़रेगी
कुछ उमीदे-करम[3] में गुज़री उम्र
कुछ उमीदे - करम में गुज़रेगी
ज़िन्दगी यादे - दोस्त है, यानी
ज़िन्दगी है तो ग़म में गुज़रेगी
अब करम का ये माहसल[4] है कि यह
यादे - अहदे - सितम[5] में गुज़रेगी
दिल को यादे-निशाते-वस्ल[6]! न छेड़
ग़म में गुज़री है ग़म में गुज़रेगी
हसरते दम-ब-दम में गुज़री उम्र
इबरते - दम - ब - दम[7] में गुज़रेगी
हश्र कहते हैं जिसको ऐ 'फ़ानी'
वह घड़ी शरहे - ग़म[8] में गुज़रेगी

◇ ◇ ◇

बे - ज़ौक़े - नज़र[9] बज़्मे तमाशा[10] न रहेगी
मुंह फेर लिया हमने तो दुनिया न रहेगी

१. मन्दिर २. काबा ३. कृपा की आशा ४. फल ५. जुल्म की याद ६. मिलने की याद ७. निरंतर सीख ८. दुःख की व्याख्या ९. प्रेम-दृष्टि के बग़ैर १०. सौंदर्य

ईज़ा[1] न रहेगी जो गवारा न रहेगी
छोड़ा मुझे दुनिया ने तो दुनिया न रहेगी
यह दर्दे - मुहब्बत ग़मे - दुनिया तो नहीं है
अब मौत भी जीने का सहारा न रहेगी
ऐसा भी कोई दिन मेरी क़िस्मत में है 'फ़ानी'
जिस दिन मुझे जीने की तमन्ना न रहेगी

○ ○ ○

जब दिल में तेरे ग़म ने हसरत की बिना[2] डाली
दुनिया मेरी राहत की क़िस्मत ने मिटा डाली
अब बर्क़े-नशेमन[3] को हर शाख़ से क्या मतलब
जिस शाख़ को ताका था वह शाख़ जला डाली
इज़हारे-मुहब्बत[4] की हसरत को ख़ुदा समझे
हमने ये कहानी भी सौ बार सुना डाली
जीने भी नहीं देते मरने भी नहीं देते
क्या तुमने मुहब्बत की हर रस्म उठा डाली
जीने में न अब 'फ़ानी' मरने में शुमार अपना
मातम की बिसात[5] उसने क्या कहके उठा डाली

○ ○ ○

हर बलाए - शामे - फ़ुरक़त देख लो
हमने दुनिया में क़यामत देख ली

१. कष्ट २. नींव ३. बिजली ४. प्रेम-निवेदन ५. बिछावन

ज़ौक़े-नज़्ज़ारा[१] सलामत चाहिए
जिस तरफ़ देखा वो सूरत देख ली
आपने अंजाम देखा इश्क़ का
आपने 'फ़ानी' की तुरबत[२] देख ली!

◇ ◇ ◇

यह हस्तिए-दोरोज़ा[3] गोया कि नहीं फ़ानी[४]
अल्ला रे तेरा, ऐ दिल! अन्दाज़े-परीशानी[५]
ताबीर[६] अजल[७] ने दी इस ख़्वाबे-परीशां[८] की
हम मर के तुझे समझे, ऐ हस्तिए-इंसानी[९]!
याँ मेरे क़दम से है वीराने की आबादी
यां घर में, ख़ुदा रक्खे, आबाद है वीरानी
माना कि ग़मे-जानां[१०] ग़ारतगरे-सामां[११] है
रक्खा ही यहां क्या है जुज़ बे-सरो-सामानी[१२]
'फ़ानी' वो बला-कश[१3] हूं ग़म भी मुझे राहत है
मैंने ग़मो-राहत[१४] की सूरत भी न पहचानी

◇ ◇ ◇

इस कशमकशे-हस्ती में कोई राहत न मिली जो ग़म न हुई
तदबीर का हासिल क्या कहिए तक़दीर की गर्दिश कम न हुई

१. दर्शन की इच्छा २. क़ब्र ३. क्षणिक जीवन ४. नश्वर ५. परेशानी का ढंग ६. स्वप्न-फल ७. मौत ८. दुःस्वप्न ९. मानव जीवन १०. प्रिय का प्रेम ११. सामान मिटाने वाला १२. निर्धनता के अलावा १३. दुखी १४. सुख-दुःख

अल्ला रे सुकूने - क़ल्ब[१] उसका दिल जिसने लाखों तोड़ दिये
जिस ज़ुल्फ़ ने दुनिया बरहम की वह आप कभी बरहम न हुई
ग़म राज़ है उनकी तजल्ली का जो आलम[२] बनकर आम हुआ
दिल नाम है उनकी तजल्ली का जो राज़ रही आलम न हुई
दिल की यह वीरानी ही अजब है, वह भी आखिर क्या करते
जब दिल में उनके रहते बसते यह वीरानी कम न हुई
इन्सान की सारी हस्ती का मक़सूद है 'फ़ानी' एक नज़र
यानी वो नज़र जो दिल में उतर कर ज़ख्म बनी, मरहम न हुई

◇ ◇ ◇

मर कर मरीज़े - ग़म की वो हालत नहीं रही
यानी वो इज़्तराब[३] की सूरत नहीं रही
हर लम्हाए-हयात[४] रहा वक़्फ़े - कारे - शौक़[५]
मरने की उम्र भर मुझे फ़ुरसत नहीं रही
एक नालाए - ख़मोशे - मुसलसल[६] है और हम
यादश - बख़ैर, ज़ब्त की ताक़त नहीं रही
यूं मिट गई वफ़ा कि ज़माने का ज़िक्र क्या
अब दोस्त से भी कोई शिकायत नहीं रही
ऐ दर्दे-इश्क़ ! अब तो ख़ुदा के लिए न छेड़
दिल में कराहने की भी ताक़त नहीं रही

---

१. शान्ति २. संसार ३. तड़प ४. जीवन का क्षण ५. प्रेम में व्यतीत ६. निरंतर चुपचाप रोदन

हर बेगुनह से वादाए - बख़्शिश है रोज़े - हश्र[१]
गोया गुनाह की भी ज़रूरत नहीं रही
इब्रत ने बेकसी का निशां भी मिटा दिया
उड़ती थी जिसपे ख़ाक वो तुरबत नहीं रही
महशर में भी वो अहदे-वफ़ा[२] से मुकर गये
जिसकी ख़ुशी थी अब वो क़यामत नहीं रही
किस मुंह से ग़म के ज़ब्त का दावा करे कोई
ताक़त बक़द्रे - हसरते - राहत[३] नहीं रही
'फ़ानी' उमीदे - मर्ग ने भी दे दिया जवाब
जीने की हिज्र में कोई सूरत नहीं रही

◇ ◇ ◇

वह नज़र कामयाब होके रही
दिल की बस्ती ख़राब होके रही
इश्क़ का नाम क्यों करें बदनाम
ज़िन्दगी थी, ख़राब होके रही
ताबे-नज़्ज़ारा[४] ला सका न कोई
बेहिजाबी[५] हिजाब[६] होके रही
हश्र के दिन किसी की हर बेदाद[७]
करमे - बेहिसाब[८] होके रही

१. क़यामत में २. प्रेम-प्रतिज्ञा ३. सुख की आकांक्षा के अनुसार
४. दर्शन की क्षमता ५. प्रकट होना ६. परदा ७. जुल्म ८. अपार कृपा

हम से 'फ़ानी' न छुप सका ग़मे-दोस्त
आरज़ू बेनक़ाब होके रही

◇ ◇ ◇

अरसाए - हश्र[१] दूर है ख़ाके - दिले - हज़ीं[२] सही
मश्क़े-ख़रामे-नाज़[३] कर वां न सही यहीं सही
सर नहीं संगे-दर तो है, तर्क न कर नमाज़े-इश्क़
ख़ाके-जबीं[४] से काम ले सजदाए-बे-जबीं[५] सही
है तेरे तीरे-नाज़ के रुख़ पे निशाना मुनहसर[६]
दिल हो जिगर हो कोई हो तीरे - नज़र कहीं सही
मैं हूं रहीने-इन्तज़ार[७] आइए या न आइए
अपने यक़ीं को क्या करूं आपकी हां नहीं सही
'फ़ानी'-ए-ज़ार पर करम[८] तेरी रज़ा[९] के है सुपुर्द
एक निगाह, और अगर यह भी नहीं, नहीं सही

◇ ◇ ◇

मौत भी फ़ुरक़त में टल कर रह गयी
आख़िरी सूरत निकल कर रह गयी
जल रहे हैं आज तक दिल के चिराग़
तूर पर इक शमअ़ जल कर रह गयी
ज़िन्दगी की दूसरी करवट थी मौत
ज़िन्दगी करवट बदल कर रह गयी

१. क़यामत २. दुखी हृदय की मिट्टी ३. सुन्दर चाल का अभ्यास ४. माथे की मिट्टी ५. बग़ैर माथे के वंदना ६. निर्भर ७. प्रतीक्षा-रत ८. कृपा ९. मरज़ी

लब रहे ना-आशनाए-दर्दे-दिल[1]
आह भी दिल से निकल कर रह गयी
अब कहां 'फ़ानी' वो जोशे-इज़्तराब[2]
क्या तबीयत थी, संभल कर रह गयी

◇ ◇ ◇

ऐ काश शहादत के अरमान निकल जाते
क़ातिल की निगाहों के तेवर ही बदल जाते
आते वो, तो फ़ुरक़त के दुख क्या हैं अजल कैसी
आयी हुई टल जाती आये हुए टल जाते
सर अब मुझे भारी है, सदक़ा तेरे ख़ंजर का
यह बार उतर जाता जो वार थे चल जाते

◇ ◇ ◇

राज़ थे मेरे ज़ख़्महाए-जिगर[3]
तो ज़रा तुमने सी दिये होते
ज़ब्त का हौसला निकल जाता
कुछ सितम और भी किये होते
ज़िन्दगी बेदिलों पे तोहमत थी
मर न जाते अगर जिये होते ?
कुछ समझकर क़फ़स[4] में, ऐ सय्याद !
चार तिनके ही रख दिये होते

१. मन की पीड़ा से अपरिचित २. तड़प ३. दिल के घाव
४. पिंजड़े

गुल दिये थे तो काश, फ़स्ले-बहार !
तूने कांटे भी चुन लिये होते
थे फिर उनके दिये हुए 'फ़ानी'
और सदमे उठा लिये होते

◇ ◇ ◇

बेदाद[1] के खूगर[2] थे, फ़रियाद तो क्या करते
करते तो हम अपना ही कुछ तुमसे गिला करते
तक़दीरे-मुहब्बत थी मर मर के जिये जाना
जीना ही मुक़द्दर था हम मर के भी क्या करते
हम आप कहा करते और आप सुना करते
जान उस पे फ़िदा करके नादिम[3] उसे चाहा था
तदबीर तो अच्छी थी, तक़दीर को क्या करते
अहबाब[4] से क्या कहिए, इतना न हुआ 'फ़ानी'
जब ज़िक्र मेरा आता मरने की दुआ करते

◇ ◇ ◇

हम मौत भी आये तो मसरूर[5] नहीं होते
मजबूरे-ग़म इतने भी मजबूर नहीं होते
उम्मीद के वादों से दिल कुछ तो बहलता था
अब यह भी तेरे ग़म को मंजूर नहीं होते

१. जुल्म २. अभ्यस्त ३. शर्मिन्दा ४. मित्रों ५. खुश

है इश्क़ तेरा 'फ़ानी' तशहीर[1] भी शोहरत भी
रुसवाए-मुहब्बत यूं मशहूर नहीं होते

◇ ◇ ◇

कुछ बस ही न था वरना ये इल्ज़ाम न लेते
हम तुझ से छुपाकर भी तेरा नाम न लेते
क्या उम्र में इक आह भी बख़्शी नहीं जाती
इक सांस भी क्या आपके नाकाम[2] न लेते
अब मै[3] में न वह कैफ़[4] न अब जाम में वह बात
ऐ काश तेरे हाथ से हम जाम न लेते
क़ाबू ही ग़मे-इश्क़ पे चलता नहीं वरना
अहसाने - ग़मे - र्गादिशे - अय्याम[5] न लेते
खामोश भी रहते तो शिकायत ही ठहरती
दिल दे के कहां तक कोई इल्ज़ाम न लेते
तेरी ही रज़ा और थी, वरना तेरे बिस्मिल
तलवार के साये में भी आराम न लेते
इक जब्र है यह ज़िन्दगीए-इश्क़, कि 'फ़ानी'
हम मुफ़्त भी यह ऐशे-ग़म-अंजाम[6] न लेते

◇ ◇ ◇

गुल खिज़ां के राज़ का महरम[7] नज़र आया मुझे
हर तबस्सुम[8] परदा-दारे-ग़म[9] नज़र आया मुझे

१. प्रसिद्धि २. निराश ३. शराब ४. मज़ा ५. दुर्भाग्य का अहसान ६. दुखदायी सुख ७. भेदी ८. मुस्कान ९. दुःख को छुपाने वाली

हद पे जब पहुंची नज़र, हद्दे-नजर आगे बढ़ी
जो नज़र आया ज़ियादा, कम नज़र आया मुझे
ज़ख्म के मरहम भी देखे मरहमे-बेज़ख्म भी
ज़ख्मे-दिल ही ज़ख्मे-बेमरहम नज़र आया मुझे
मैंने 'फ़ानी' डूबते देखी है नब्ज़े-कायनात[१]
जब मिज़ाजे-दोस्त कुछ बरहम[२] नज़र आया मुझे

◇ ◇ ◇

ग़म मुजस्सम[३] नज़र आया तो हम इन्सां समझे
बर्क़[४] जब जिस्म से वाबस्ता[५] हुई, जां समझे
हुक्मे-वहशत[६] है कि ज़िन्दां[७] को भी सहरा[८] जानो
दिल वो आज़ाद कि सहरा को भी ज़िन्दां समझे
'फ़ानी' इस आलमे-ज़ाहिर में सरापा ग़म था
छुप गया ख़ाक में तो हम ग़मे-पिनहां[९] समझे

◇ ◇ ◇

इधर न देख, मुझे बेक़रार रहने दे
मेरी नज़र में मेरा एतबार रहने दे
बक़ैदे-हश्र[१०] भी अहदे-वफ़ाए-अहद[११] न कर
ख़राबे-शौक़ को उम्मीदवार रहने दे

---

१. संसार की नब्ज़ २. बिखरा ३. साक्षात ४. बिजली ५. सम्बद्ध ६. उन्माद की आज्ञा ७. कैद ८. जंगल ९. छुपा दर्द १०. क़यामत में ११. वादा पूरा करने का वादा

नवेदे-ज़िन्दगिए-दिल[१] की ताब सहल नहीं
अभी कुछ और मुझे सोगवार[२] रहने दे

◇ ◇ ◇

किसी को क्या मेरे सूदो - ज़ियां[3] से
गिरे क्यों बर्क़[४] बचकर आशियां[५] से
मिटाते हैं ख़ते-तक़दीर[६] को हम
जबीं[७] घिसते हैं तेरे आस्तां[८] से
बहुत सर पीटती हैं आरज़ूएं
कोई नाकाम जाता है जहां से

◇ ◇ ◇

क्या-क्या न उसने काम किया इक हिजाब[९] से
अक्सर सफ़ें[१०] नज़र की उलट दीं नक़ाब से
दिल क्या है, पूछ अपने रुख़े-बे-नक़ाब[११] से
शायद निशाने-ज़र्रा मिले आफ़ताब से
'फ़ानी' जहाने-इश्क़ में हों लाख इन्क़लाब
ग़म बदगुमां नहीं असरे - इन्क़लाब से

◇ ◇ ◇

इक सरगुज़िश्ते-ग़म[१२] है कि अब क्या कहें जिसे
वह वारदाते-क़ल्ब[13], तमन्ना कहें जिसे

---

१. खुश होने का शुभ सन्देश २. रंजीदा ३. लाभ-हानि ४. बिजली ५. घोंसला ६. भाग्य-रेखा ७. माथा ८. चौखट ९. परदा १०. क़तारें ११. खुला मुखड़ा १२. प्रेम कथा १३. दिल की कहानी

अब ज़िन्दगी है नाम उसी उम्मीदे-दूर का
टूटे हुए दिलों का सहारा कहें जिसे
दिल हासिले-हयात[1] है और दिल का माहसल[2]
वह बेदिली कि जाने-तमन्ना कहें जिसे
सहरा[3] का इज्तहाद[4] है हर ज़र्रे की नमूद[5]
ज़र्रे का एतबार है सहरा कहें जिसे
कब तक रहीने-ज़ौक़े-तमाशा रहे कोई
अब वो निगाह दे कि तमाशा कहें जिसे
है इत्तसाले-क़तरा-ओ-दरिया[6] पे मुनहसर[7]
वह आबरू-ए-क़तरा कि दरिया कहें जिसे
'फ़ानी' सुकूने-मौत ने दिल से मिटा दिया
वह नक़्शे-बे-क़रार[8] कि दुनिया कहें जिसे

◇ ◇ ◇

दूरी ही फिर अच्छी थी नज़दीकी-ए-मंज़िल से
कश्ती को मिला साहिल[9] टकरा गयी साहिल से
ईमाने - मुहब्बत की बुझती नहीं चिंगारी
उठता है धुआं अबतक ख़ाके-हरमे-दिल[10] से
वह हम से कहां छुपते हम ख़ुद हैं हिजाब[11] उनका
महमिल में जो छुपते हैं छुपते नहीं महमिल से

१. जीवन-फल २. परिणाम ३. जंगल ४. संघर्ष ५. प्रकट होना ६. बूंद और नदी का मिलन ७. निर्भर ८. बेचैन चित्र ९. तट १०. दिल के काबे की मिट्टी ११. परदा

ग़ुरबत[1] में ग़नीमत है इतना ही निशां 'फ़ानी'
कुछ ख़ाक के ज़र्रे हैं लिपटे हुए मंज़िल से

◇ ◇ ◇

और हो न हो हासिल इन्तज़ारे-फ़र्दा[2] से
उठ गया मुहब्बत का एतबार दुनिया से
उनकी दिल-नवाज़ी[3] में कोई शक नहीं लेकिन
उनकी दिल-नवाज़ी को लाग है तमन्ना से
ले तेरा तसव्वुर भी जाके अब न आयेगा
रस्मे-होश उठती है आशिक़ी की दुनिया से
क़िस्साए-जुनूं अब तक याद है मगर इतना
इन्तहा[4] है ज़र्रों पर इब्तदा[5] है सहरा से
हुस्न की अदाओं को देख ही लिया होता
काम आ पड़ा 'फ़ानी' इश्क़े-कार-फ़रमा[6] से

◇ ◇ ◇

कुछ होश गंवाने के चर्चे कुछ होश में फिर आ जाने के
ये दोनों आलम कुछ भी नहीं टुकड़े हैं मेरे अफ़साने के
कुछ हैरत[7] के आसार से हैं कुछ दिल सा ठहरा जाता है
वहशत से गुज़रते जाते हैं अंदाज़ तेरे दीवाने के

१. परदेस २. कल का वादा ३. कृपा ४. अंत ५. आरंभ
६. कार्यशील प्रेम ७. हैरानी

बेदाद[1] पे कहिए उफ़ न करें, कहिए तो तड़पकर दम दे दें
कुछ शग़ल हमें भी आते हैं सरकार का दिल बहलाने के
इक जादा[2] है ग़मे-दुनिया का इक राहे-मुहब्बत है 'फ़ानी'
हर आफ़त के दो रस्ते हैं और वो भी मेरे ग़मख़ाने[3] के

◇ ◇ ◇

नज़र आज उनसे रह गई मिल के
आख़िरी कुछ पयाम थे दिल के
तूने देखे हैं, ऐ नसीमे-सहर[4] !
कुछ फ़िदाई[5] थे शमअ़-महफ़िल के
ख़लिशें थीं हमारे दम के साथ
आज कांटे निकल गये दिल के
फूल को फूल जानने वाले !
कल ये छींटे थे ख़ूने-बिस्मिल[6] के
मिल भी जाते हैं छूटने वाले
छोड़ जाता है यूं कोई मिल के
मर्गे-'फ़ानी'[7] में अब तो देर न कर
सहल फ़रमाने वाले मुश्किल के !

◇ ◇ ◇

गिरियाए-जोशे-नदामत[8] ! बस अब थमने का तू नाम न ले
जब तक रहमत[9] का हर पहलू दिल का दामन थाम न ले

१. ज़ुल्म २. रास्ता ३. दिल ४. सुबह की हवा ५. प्रेमी ६. शहीद का ख़ून ७. 'फ़ानी' की मौत ८. शर्म का रोना ९. ईश्वरीय कृपा

राहत का मफ़हूम[1] यही है जहदे-तलब[2] से बाज़ न आ
बढ़ने दे दिल की बेचैनी, तड़पे जा आराम न ले
दिल तो दिल है दिल को चैन आ जाना तो आसान नहीं
दर्द वो है जो दिल में उठकर आप भी फिर आराम न ले
जो होना है होके रहेगा, मजबूरी की हद से न बढ़
बैठे बिठाये अपने सर आज़ादी का इल्ज़ाम न ले
हुस्ने-पशेमां[3] को 'फ़ानी' मय्यत[4] पे न दे तकलीफ़े-करम
वज़अ्-शिकस्ते-इश्क़[5] निभा दे, देख कोई इल्ज़ाम न ले

◇ ◇ ◇

हर दिल है तेरे ग़म की अमानत लिये हुए
ज़र्रे हैं इक जहाने - हक़ीक़त[6] लिये हुए
दे इज़्ने-आम[7] इश्क़ को ताराजे - होश[8] का
बैठा हूं दिल में सब्र की दौलत लिये हुए
इस खाक़दाने-तीरा[9] में क्या ढूंढता हूं मैं
फिरता हूं शमअ्‌ए-दाग़े-मुहब्बत[10] लिये हुए
काफ़िर हूं, गर यक़ीं न हो काफ़िर की बात का
वादे हैं एतबारे - क़यामत लिये हुए

१. अर्थ २. कामना ३. लज्जित सौंदर्य ४. लाश ५. प्रेम के पराजय का ढंग ६. आध्यात्मिक संसार ७. सार्वजनिक अनुमति ८. होश गंवाना ९. अंधेरा संसार १०. प्रेम-दुःख-रूपी रात

रोशन हुई वो गोरे-ग़रीबां[1] में शमग्रए-नूर[2]
ग्राग़ोशे-नूर[3] में मेरी तुरबत[4] लिये हुए

◇ ◇ ◇

जल्वा[5] बे-चश्मे-ग्राशना[6] क्या है
मैं ही मैं हूं मेरे सिवा क्या है
शग़ल है ज़िन्दगी की फ़ुरसत का
ग्रौर मजबूर की दुग्रा क्या है
तेरी तदबीर है मेरी तक़दीर
इब्तदा[7] यह है इन्तहा[8] क्या है
गिला-मन्दे-जफ़ा[9] तो हो 'फ़ानी'
यह भी मालूम है जफ़ा क्या है ?

◇ ◇ ◇

दुनिया, मेरी बला जाने, महंगी है या सस्ती है
मौत मिले तो मुफ़्त न लूं हस्ती की क्या हस्ती है
ग्राबादी भी देखी है वीराने भी देखे हैं
जो उजड़े ग्रौर फिर न बसे दिल वो निराली बस्ती है
जान सी शै बिक जाती है एक नज़र के बदले में
ग्रागे मरज़ी गाहक की इन दामों तो सस्ती है
जग सूना है तेरे बग़ैर ग्रांखों का क्या हाल हुग्रा
जब भी दुनिया बसती थी ग्रब भी दुनिया बसती है

१. ग़रीबों की क़ब्र २. नूर की शमा ३. प्रकाश की गोद ४. क़ब्र
५. ज्योति ६. पहचानने वाली नज़र के बिना ७. ग्रादि ८. ग्रंत
९. ज़ुल्म की शिकायत करने वाला

आंसू थे सो ख़ुश्क हुए, जी है कि उमडा आता है
दिल पे घटा सी छायी है खुलती है न बरसती है
दिल का उजड़ना सहल सही बसना सहल नहीं, ज़ालिम !
बस्ती बसना खेल नहीं बसते - बसते बसती है
'फ़ानी' जिसमें आंसू क्या, दिल के लहू का काल न था
हाए ! वो आंख अब पानी की दो बूंदों को तरसती है

◇ ◇ ◇

कारवां गुज़रा किया हम रहगुज़र देखा किये
हर क़दम पर नक़्शे-पाये-राहबर[1] देखा किये
दर्द - मंदाने - वफ़ा[2] की हाय रे मजबूरियां
दर्दे-दिल देखा न जाता था मगर देखा किये
यास[3] जब छायी, उमीदें हाथ मलकर रह गयीं
दिल की नब्ज़ें छुट गयीं और चारागर[4] देखा किये
तू कहां थी, ऐ अजल[5] ! ऐ ना-मुरादों[6] की मुराद !
मरने वाले राह तेरी उम्र भर देखा किये
ज़ीस्त[7] थी 'फ़ानी' ब-क़द्रे-फ़ुरसते-तमहीदे-शौक़[8]
उम्र भर हम परतवे-नूरे-बशर[9] देखा किये

◇ ◇ ◇

१. पथ-प्रदर्शक का पद-चिह्न २. प्रेमियों ३. निराशा ४. चिकित्सक ५. मौत ६. अभागों ७. जीवन ८. प्रेम की भूमिका तक ९. आदमी के सौंदर्य की छाया

उस नूरे-मुजस्सम[१] के अफ़साने को क्या कहिए
है शमअ़ भी परवाना परवाने को क्या कहिए
हर दर[२] से तेरे तालिब नाकाम[३] पलट आये
काबे में है सन्नाटा बुतख़ाने को क्या कहिए
कुछ खेल न था यूं भी परवाने का जल बुझना
जलकर न बुझे ऐसे परवाने को क्या कहिए
आग़ाज़[४] भी तू जिसका अंजाम भी तू जिसका
उस दर्दे-मुहब्बत के अफ़साने को क्या कहिए
आबादी की आबादी वीराने का वीराना
अरमान भरे दिल के काशाने[५] को क्या कहिए
उजड़ी हुई आंखों में रौनक़ तेरे दम से थी
वीरान है हर बस्ती, वीराने को क्या कहिए
किसने उसे देखा है, ऐ हसरते-नज़्ज़ारा[६] !
'फ़ानी' तो है दीवाना, दीवाने को क्या कहिए

---

१. साक्षात प्रकाश २. द्वार ३. प्रेमी ४. आरम्भ ५. घ
६. दर्शन की अभिलाषा

रुबाइयाँ

तकमीले - बशर[1] नहीं है सुल्तां होना
या सफ़ में फ़रिश्तों की नुमायां होना
तकमील है अज्ज़े-बंदगी[2] का अहसास
इन्सान की मेराज[3] है इन्सां होना

◇ ◇ ◇

वह हूर को चाहा कि परी को चाहा
चाहा उसे, हमने जिस किसी को चाहा
सौ रंग से थी दिल में तमन्ना उसकी
जब उसको न चाहा तो उसी को चाहा

◇ ◇ ◇

बंदा कोई ऐसा भी खुदा का होगा
जिसका चाहा फ़लक[4] का चाहा होगा
मर-मर के तो हम भी जी रहे हैं 'फ़ानी'
जीने की तरह भी कोई जीता होगा ?

◇ ◇ ◇

कितनों को जिगर का ज़ख्म सीते देखा
देखा जिसे, खूने - दिल ही पीते देखा
अब तक रोते थे मरने वालों को, और अब
हम रो दिये जब किसी को जीते देखा

◇ ◇ ◇

---

१. मानव की पूर्णता २. नम्रता ३. पूर्णता ४. भाग्य

सब से मुझे बेगाना बनाकर छोड़ा
इबरत का इक अफ़साना बनाकर छोड़ा
आने न दिया होश मुहब्बत ने कभी
आख़िर मुझे दीवाना बनाकर छोड़ा

◇ ◇ ◇

ऐ फ़ित्नाए - रोज़गार[१] ! आहिस्ता गुज़र
आशोबे-दिले-फ़िगार[२] ! आहिस्ता गुज़र
नाज़ुक है बहुत दिमाग़े - अरबाबे - जुनूं[३]
ऐ नकहते-ज़ुल्फ़े-यार[४] ! आहिस्ता गुज़र

◇ ◇ ◇

अल्लाह रे मालो-जाहो-सरवत[५] का ग़रूर
इस ख़ाक के पुतले को क़यामत का ग़रूर
इस आज के फ़िरऔन ने यह भी देखा—
फिरऔन रहा, न वह हुकूमत का ग़रूर

◇ ◇ ◇

यह अर्ज़ो-समा[६] ये उन्सो-जां[७] हैं अलफ़ाज़
अलफ़ाज़ के मानी भी यहां हैं अलफ़ाज़
इक मानी-ए-बे-लफ़्ज़[८] है आलम 'फ़ानी'
मानी की लताफ़त[९] पे गिरां[१०] हैं अलफ़ाज़

◇ ◇ ◇

१. संसार-दुःख २. दुःख की हलचल ३. प्रेमियों का दिमाग़ ४. प्रिय के केशों की सुगंध ५. धन ६. पृथ्वी, आकाश ७. प्रेम और प्राण ८. शब्दहीन अर्थ ९. कोमलता १०. भारी

हस्ती के न आग़ाज़[1] न अंजाम में दख़्ल
तकलीफ़ पे क़ाबू है न आराम में दख़्ल
इक सांस पे उम्र भर कभी बस न चला
मुख़्तार[2] हूं और नहीं किसी काम में दख़्ल

◇ ◇ ◇

हरचन्द बहुत बे - सरो - सामां[3] हूं मैं
और क़अ्रे - गुनाह[4] पर पशेमां[5] हूं मैं
लेकिन ये ग़नीमत है फ़रिश्ता मैं नहीं
बख़शिश को ये काफ़ी है कि इन्सां हूं मैं

◇ ◇ ◇

अब यह भी नहीं कि नाम तो लेते हैं
दामन फ़क़त अश्कों से भिगो लेते हैं
अब हम तेरा नाम लेके रोते भी नहीं
सुनते हैं तेरा नाम तो रो लेते हैं

◇ ◇ ◇

चाहे से बदलती है मशीयत[6] भी कहीं
छुपती है छुपाये से हक़ीक़त भी कहीं
ग़म मै से ग़लत न कर, कि ग़म क़िस्मत है
पलटी है ग़लत किये से क़िस्मत भी कहीं

◇ ◇ ◇

१. आरंभ २. स्वच्छन्द ३. निर्धन ४. पाप का गड्ढा ५. लज्जित
६. भाग्य

क़तरे को यहां सहाब[१] भी कहते हैं
दरिया है, जिसे हुबाब[२] भी कहते हैं
हर जुज़्व[३] , बजाए-ख़्वेश[४] , कुल है 'फ़ानी'
ज़र्रे ही को आफ़ताब भी कहते हैं

◇ ◇ ◇

इक शमअ़ की सौ रूप में तनवीरें[५] हैं
इक हर्फ़ की सौ रंग में तहरीरें हैं
बन जाती है हर निगाह मंज़र[६] 'फ़ानी'
जो देख रहा हूं मेरी तसवीरें हैं

◇ ◇ ◇

दुनिया कहीं दोज़ख़ है कहीं ख़ुल्दे - बरीं[७]
दिल है वही एक शाद है एक हज़ीं[८]
यह ज़र्रा चमक उट्ठा, वो तारीक[९] हुआ
जम कर न रही शुआ़ए - ख़ुर्शीद[१०] कहीं

◇ ◇ ◇

दुनिया अंधेर जब हुई जाती हो
उम्मीद भी साथ छोड़ती जाती हो
समझो सुन ली ख़ुदा ने दिल की फ़रियाद
हरचन्द कि जब उफ़ भी न की जाती हो

◇ ◇ ◇

---

१. बादल २. बुलबुला ३. अंश ४. अपनी जड़ से. ५. ज्योतियां
६. दृश्य ७. स्वर्ग ८. दु:खी ९. अंधेरा १०. सूर्य-किरण

तर्के - ग़म[1] से ख़ुशी की हसरत न मिटी
सूरत के बदल जाने से सूरत न मिटी
ग़म लाख ग़लत किया, मगर फिर ग़म था
इन्कारे - हक़ीक़त से हक़ीक़त न मिटी

◇ ◇ ◇

आलम बदला, फ़ज़ाए - आलम बदली
हर शै[2] बे - इख़्तियारो - पैहम[3] बदली
हां इक मेरी तक़दीर कि बदली ही नहीं
इक मेरी तबीयत कि बहुत कम बदली

◇ ◇ ◇

कुछ काम नहीं तो काम कर जाने दे
या रब ! दुनिया से अब गुज़र जाने दे
मर-मर के जिये जाते कहां तक 'फ़ानी'
जीना नहीं मंजूर तो मर जाने दे

◇ ◇ ◇

आंखों से जो ख़ूने-दिल बहे, बहने दे
तख़फ़ीफ़[4] न चाह दिल को ग़म सहने दे
ग़म में ये तसर्रुफ़[5] है ख़यानत[6] 'फ़ानी'
ग़म उसकी अमानत है, युंही रहने दे

◇ ◇ ◇

१. रंज छोड़ना २. चीज़ ३. अपने आप और निरंतर ४. कमी
५. दख़ल ६. बेईमानी

वक़्त अपना सभी तरह गुज़र जाता है
अच्छी कि बुरी तरह गुज़र जाता है
जो लम्हा किसी तरह गुज़रता ही नहीं
फ़िलजुम्ला[1] किसी तरह गुज़र जाता है

◇ ◇ ◇

क्या जानिए किस की जुस्तजू जारी है
इक उम्र से रस्मे-आरज़ू जारी है
कुछ अपनी ज़बां में दिल कहे जाता है
बे-समझी हुई सी गुफ़्तगू जारी है

◇ ◇ ◇

दिल में ख़लिशे-दर्दे-निहां[2] जारी है
दिल पर असरे - सूदो - ज़ियां[3] जारी है
मर जाऊं तो एतबार आये शायद
जब तक जीता हूं, इम्तहां जारी है

◇ ◇ ◇

दिल से तेरी ही गुफ़्तगू काफ़ी है
तुझ से तेरी ही आरज़ू काफ़ी है
फ़ानी हो[4] कि बाक़ी[5] हो, वो दुनिया हो कि ख़ुल्द[6]
दरकार नहीं, कि एक तू काफ़ी है

◇ ◇ ◇

---

१. संक्षेप में २. छुपे दर्द की खटक ३. हानि-लाभ का प्रभाव
४. नश्वर ५. अमर ६. स्वर्ग

फुटकर शेर

न आओ सामने, लेकिन तसव्वुर में तो आओगे
ये आंखों का है परदा, दिल से परदा हो नहीं सकता

◇ ◇ ◇

वो मेरी अयादत[1] को आये हैं दमे-आख़िर
हां और अभी दम भर ऐ उम्र वफ़ा करना

◇ ◇ ◇

बुनियादे-जहां क्या है मजबूरे - फ़ना होना
सरमायाए - हस्ती है महरूमे - बक़ा[2] होना

◇ ◇ ◇

वह सख़्त-जां हैं हम कि शबे-ग़म भी काट दी
'फ़ानी' हमें तो नींद न आई तमाम रात

◇ ◇ ◇

ऐ शबे-वस्ल ! कोई दम तो ठहर
उम्रे-दो-रोज़ा का शबाब है आज

◇ ◇ ◇

जो दिल ग़नी है तो 'फ़ानी' ग़नी[3] है मुफ़लिस भी
नहीं गदा को मयस्सर, वो क्या है शाह के पास

◇ ◇ ◇

है सोज़े - ग़म[4] हजूमे - तमन्ना में इस तरह
जैसे कि जल रही हो किसी अंजुमन में शमअ़

◇ ◇ ◇

---

१. बीमार का हाल पूछना २. अमरता-रहित ३. धनी ४. प्रेमताप

वो आते हैं यहां, ऐ आख़िरी दम !
वफ़ा कर, हो सके तुझसे जहाँ तक
ये रोना रात-दिन, यह ग़म में घुलना
कहां तक, 'फ़ानी-ए-महज़ूं'[1] कहां तक

◊ ◊ ◊

फाड़कर 'फ़ानी' गरेबाने - लहद[2]
हम चले दामाने-महशर[3] की तरफ़

◊ ◊ ◊

जो उट्ठा तो उठता है मीठा सा दर्द
अभी इश्क़ अपना जमाता है रंग

◊ ◊ ◊

दोनों फ़ित्ने हैं, इश्क़ और महशर[4]
एक दुनिया में, एक उक़बा[5] में

◊ ◊ ◊

मह्व - तमाशा हूं मैं, या रब ! या मदहोशे - तमाशा[6] हूं
उसने कब का फेर लिया मुंह, अब किसका मुंह तकता हूं

◊ ◊ ◊

ग़म के टहोके कुछ हों, बला से, आके जगा तो जाते हैं
हम हैं मगर वो नींद के माते जागते ही सो जाते हैं

◊ ◊ ◊

१. दुखी 'फ़ानी' २. क़ब्र-रूपी वस्त्र ३. क़यामत-रूपी दामन
४. क़यामत ५. परलोक ६. तमाशे में मस्त